Neo Star

अंशांश

हिंदी पाठमाला

(Text-cum-Workbook)

5

Introducing CHAPTERWISE VIDEO LECTURES

DESIGNED ACCORDING TO NEP 2020 GUIDELINES

लेखिकाएँ
डॉ० गीता रानी
एम० ए० (हिंदी) गोल्ड मेडलिस्ट
पी-एच०डी०
शोभा जैन
(एम.ए.)

Vardhman Books International Pvt. Ltd.
info@vardhmanbooks.com www.vardhmanbooks.com

Vardhman Books International Pvt. Ltd.

Branch Office : Plot No. 16, Sector 10-C, IInd floor,
Vasundhara, Delhi/NCR—201012
info@vardhmanbooks.com
www.vardhmanbooks.com
Toll Free No. 1800-121-9968

© प्रकाशक :

सभी अधिकार प्रकाशकाधीन हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक में समाहित संपूर्ण पाठ्य-सामग्री के किसी भी भाग का मुद्रण, इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य किसी विधि से संग्रहण, प्रसारण अथवा प्रकाशन पूर्णतया वर्जित है।

यद्यपि इस पुस्तक को लेखन/संपादन/प्रूफ रीडिंग, तथा चित्रांकन की दृष्टि से त्रुटिरहित रखने तथा पाठ्य-सामग्री को शुद्ध रखने का यथासंभव प्रयास किया गया है तथापि भूलवश कोई त्रुटि, मशीनी या यांत्रिकी, रह गई हो तो इसके लिए प्रकाशक, लेखक और मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। पुस्तक के सुधार हेतु प्राप्त सुझावों के लिए प्रकाशक/लेखक आभारी रहेंगे। त्रुटियों का परिमार्जन एवं प्राप्त विचारों और सुझावों का समायोजन आगामी संस्करण में कर दिया जाएगा।

संपादक मंडल : वर्धमान बुक्स संपादक मंडल
टाइप सेटिंग एवं चित्रांकन वर्धमान बुक्स
मुद्रक वर्धमान प्रिंट लाइन

रजिस्टर्ड ऑफिस : प्लॉट नं. 2, मोहकमपुर इंडस्ट्रियल एरिया,
फेज़-II, दिल्ली रोड, मेरठ (एन.सी.आर.)-250002

आमुख

प्रस्तुत हिंदी पाठमाला अयांश बालकों के मानसिक विकास की प्रक्रिया को रचनात्मक रूप से विविध स्तरों पर अग्रसर करने में एक महत्वपूर्ण शृंखला है।

इसे पूर्णतया संशोधित 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति' के अनुरूप पाठ्यक्रम पर आधारित किया गया है। पाठमाला में विविध विधाओं जैसे- कविता, एकांकी, कहानी संस्करण, पत्र, जीवनी, डायरी, चित्रकथा, लोककथा आदि का समावेश किया गया है। राष्ट्र, समाज और संस्कृति के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति भी बच्चों को सजग करने की चेष्टा इसमें निहित है।

ज्ञानवर्धन के साथ-साथ रोचकता और चित्रात्मकता इन पुस्तकों को अभिप्रायः पूर्ण बनाते हैं। भाषा की बारीकियों को सहज रूप से समझाने के उद्देश्य से व्याकरण को सहज रूप में समाहित किया गया है।

भाषा के सभी कौशलों जैसे– 'पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना, आदि का विकास हो सके, इस उद्देश्य को इस पाठमाला की रचना के दौरान विशेष लक्ष्य में रखा गया है।

पुस्तक बालकों में चिंतन-मनन की क्षमता को निश्चित ही विकसित करेगी। साथ ही उनकी अनुभूति क्षमता भी गहन हो सकेगी।

स्वयं ही संवेदना की आंदोलित भावभूमि हमारे दावों का समर्थन करेगी। आदरणीय अध्यापक बंधुओं और विद्वत्जनों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

—लेखिकाएँ व प्रकाशक

विषय-सूची

1.	मेरा देश (कविता)	
2.	राम की भूमिका (एकांकी)	
	• देने का सुख (चित्रकथा)	
3.	प्रचार सभा (गीति नाटिका)	
4.	अद्भुत प्रकाश (दैनिक प्रसंग)	
5.	भारत की एकता (निबंध)	
6.	किताबें (कविता)	
	स्वामी विवेकानंद (जीवन परिचय) पठन हेतु	
7.	पंच परमेश्वर (कहानी)	
8.	प्यारी दादी को पत्र (पत्र)	
9.	आँधी से टकराएँ हम (कविता)	61
	शमादान (विदेशी कहानी) पठन हेतु	67
10.	विश्वास (निबंध)	
11.	खूनी हस्ताक्षर (कविता)	77
	• भारति जय-विजय करें (कविता)	83
	• झूठी दुनिया (चित्रकथा)	84
12.	कृष्ण भक्ति के पद (पद)	86
13.	बचपन के दिन (संस्मरण)	91
	कड़वी मिठाई (कहानी) पठन हेतु	
14.	उठो धरा के अमर सपूतो (कविता)	103
	प्रश्न पत्र-I	
	प्रश्न पत्र-II	

1 मेरा देश

पूरा भारत भ्रमण करने योग्य है. भारत की संस्कृति का महान परिचय यहाँ दिखाया गया है।

अध्यापन संकेत

- अध्यापक बच्चों को भारत की महान संस्कृति के बारें में बताएँ कि यहाँ पर बहुत से महान लोगों के जन्म लिया है जो पूरे संसार में प्रसिद्ध हैं।

- भारत में जन्म लेना पुण्य या सौभाग्य के उदय होने का फल कहा जाता है। ऐसे ही भाव इस कविता के माध्यम से व्यक्त किए गए हैं—

सुंदर मंदिर, वीणा, बाँसुरी,
ऊँचे-पर्वत, गहन गुफाएँ।
यहाँ गूँजती वेद ऋचाएँ।
गौरवशाली, महिमा मंडित
भव्य अनूठा मेरा देश।

बड़े तपस्वी, बड़े यशस्वी
सिद्ध, नाथ, योगी और ज्ञानी।
महापुरुषों की जन्म स्थली यह
संस्कृतियों की यहाँ मिले निशानी,

जब-जब विचलित होते मानव,
शांति खोजने आते भारत
दूर-सुदूर देशों तक फैली
इसकी सुंदर कई कहानी।

धन-विज्ञान से जो नहीं मिलता,
वैसा कमल यहाँ पर खिलता,
भाव भरे आदर्शों वाला
बड़ा निराला मेरा देश।

वीर, सपूत, योद्धा, सेनानी
कविगण गायक, आत्मविज्ञानी।
भाँति-भाँति की हैं प्रतिभाएँ
जिनको देख के दंग रह जाएँ।
विश्व भ्रमण करके जो आए
वो भी कहें धन्य यह धरती
इसमें अलौकिक गंध विचरती।

फूल-फलों और नई बहारों
से हँसता-गाता परिवेश।
बड़ा अनोखा मेरा देश।

—डॉ० गीता रानी

शब्द-अर्थ

अनूठा - अनोखा; भव्य - शानदार; यशस्वी - जिनका नाम प्रसिद्ध हो; तपस्वी - तप करने वाले; विचलित - बेचैन; प्रतिभाएँ - विशेष योग्यता; परिवेश - माहौल; आत्मविज्ञानी - अपनी आत्मा की खोज करने वाले; महिमा मंडित - महिमा से युक्त।

अभ्यास

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) यहाँ अपने देश को कहा गया है–

(i) अनूठा ( ) (ii) साधारण ( )

(ख) भारत में पैदा हुए हैं–

(i) मूर्ख ( ) (ii) योगी और तपस्वी ( )

(ग) भारत में प्रतिभाएँ हैं–

(i) अनेक प्रकार की ( ) (ii) एक जैसी

(घ) विचलित मनुष्य शांति खोजने आते हैं– ( )

(i) भारत ( ) (ii) रूस

2. कविता पढ़कर पंक्तियाँ पूरी करो–

(क) वीर, सपूत .....।

..... आत्मविज्ञानी

.....

..... दंग रह जाएँ।

.....।

(ख) बड़े तपस्वी .....

..... ज्ञानी।

.....।

महापुरुषों की .....

..... निशानी।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) अपने देश के विषय में कविता में क्या-क्या विशेषताएँ बताई गई हैं?

.....

.....

(ख) भारत किनकी जन्म स्थली है?

.....

.....

(ग) भारत में कैसी प्रतिभाएँ हैं?

.....

.....

(घ) पूरा विश्व घूम लेने वाले लोग भी भारत के बारे में क्या विचार रखते हैं?

.....

.....

भाषा की बात

1. पढ़ो और समझो

(क) परिवेश, माहौल, वातावरण।

(ख) शांति, अमन, सुकून।

(ग) दंग, हैरान, विस्मित।

(घ) विश्व, संसार, दुनिया।

2. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द ढूँढ़कर लिखो–

वंदनीय, उपेक्षित, व्यसनी, कायर, अलौकिक

(क) जो इस लोक का न हो – .....

(ख) जो वंदना के योग्य है – .....

(ग) जिसकी उपेक्षा हो – .....

(घ) संकट देखकर भाग जाने वाला – .....

(ङ) व्यसन करने वाला – .....

3. वर्ण-विच्छेद करो–

(क) गायक – ...ग्+आ+य्+अ+क्+अ...

(ख) अनोखा – .....

(ग) सपूत – .....

(घ) धरती – .....

(ङ) सेनानी – .....

4. शब्दों को उनके विलोम शब्दों से सुमेल कीजिए–

(क)	सुंदर	(i)	अज्ञानी
(ख)	ज्ञानी	(ii)	कपूत
(ग)	वीर	(iii)	छोटा
(घ)	सपूत	(iv)	बदसूरत
(ङ)	बड़ा	(v)	कायर

- 'भारतीय संस्कृति ' विषय पर एक अनुच्छेद लिखो।

- अपने देश की कुछ महान प्रतिभाओं का उल्लेख करो, जिन्होंने विश्व में भारत का नाम ऊँचा किया हो।
- नीचे दिए गए स्थान पर उनके चित्रों को ढूँढ़कर चिपकाओ।

2 राम की भूमिका

राम की कहानी युगों-युगों से व्यक्तियों को आंदोलित करती आई है। रामलीला उसका नाट्यरूप है।

अध्यापन संकेत

- पाठ के माध्यम से विद्यार्थियों को भारत की पौराणिक कथाओं के विषय में बताएँ।

- राम की जीवन गाथा पर दशहरे से पहले स्थान-स्थान पर रामलीला की जाती है। बच्चों में इसमें भाग लेने का बड़ा उत्साह होता है। यहाँ बच्चे इसी चर्चा में व्यस्त हैं—

माँ : अरे संभव, नाराज क्यों बैठे हो, उठो, खाना खा लो।

संभव : मुझे भूख नहीं है।

माँ : क्यों?

संभव : मुझे बच्चे रामलीला में राम का रोल नहीं दे रहे हैं, इसलिए मुझे बहुत गुस्सा आ रहा है।

माँ : बनना चाहते हो रामचंद्र और करते हो गुस्सा। पता है रामचंद्र जी को उनके शांत स्वभाव के लिए ही इतना ऊँचा पद मिला है। लो, तुम्हारी मित्र-मंडली आ गई, अब नाश्ता करो और रामलीला के लिए गोष्ठी करो।

संभव : ठीक है माँ, मेरे मित्रों के लिए भी कुछ ले आना।

माँ : हाँ-हाँ, सब मिलकर खाओ। मैंने पूड़ी-आलू बनाए हैं।

(सभी नाश्ता करते हैं।)

रुचि : मैं कौशल्या माँ का रोल करूँगी, मैंने पिछले साल भी किया था।

नमिता : और सीता मैं बनूँगी, मेरे पास केसरिया साड़ी और साधुओं जैसी माला रखी है।

क्षिप्रा : मेरे पास जड़ाऊ कंगन, सितारों से जड़ी ओढ़नी व रेशमी साड़ी है। मंदोदरी के रोल के लिए मैं तैयार हूँ।

नितिन : जय हनुमान! हनुमान की भूमिका मेरी रखना।

आलोक : जी नहीं, हनुमान किसी बलशाली लड़के को बनाया जाएगा, तुम जैसे दुबले-पतले कमजोर को हनुमान नहीं बना सकते।

(नितिन मुँह लटका लेता है।)

शिशिर : यह रोल मुझे सूट करेगा। मैं रोज जिम जाता हूँ। देखो, कितना तगड़ा हूँ!

मुकेश : हाँ ठीक है, तुम ही हनुमान बनना। जरा सुधीर से पूछना कि क्या उसके पास मुकुट और मालाएँ हैं।

सुधीर : हाँ हैं, दशरथ की भूमिका पर मेरा नाम लिख लो।

मुकेश : ठीक है, रीना अब तक नहीं आई, उसे कैकेयी बनना है और 'मंथरा' मेरा मतलब है नेहा तो अपनी नानी के घर से कल आएगी।

शिशिर : राम के लिए 'तन्मय' ठीक रहेगा। उसने धनुष-बाण चलाना भी सीखा था। वैसे भी वह राम की तरह बड़े प्रेम व धैर्य से बात करता है। अब रह गया रावण, उसकी भूमिका अजय करेगा।

अजय : हाँ, कर तो लूँगा पर तुम बाद में मुझे रावण-रावण कहकर नहीं चिढ़ाओगे।

शिशिर : अरे.... नहीं-नहीं और वैसे भी हर बुरे व्यक्ति में भी कुछ अच्छे गुण अवश्य होते हैं। रावण भी महापंडित वेदों-शास्त्रों का ज्ञाता व महान शिवभक्त था। हाँ, सीता को चुराने का गलत कार्य करके उसने अपना मान-सम्मान तो खो ही दिया अपने प्राणों से भी हाथ धो बैठा।

माँ : चलो, अब अगली योजना कल बनाना, तब तक तुम्हारे और साथी भी आ जाएँगे। यह लो सब बच्चे खीर खाओ।

(सभी हाँ में सिर हिलाते हैं।)

शब्द-अर्थ गोष्ठी - सभा; बलशाली - ताकतवर; धैर्य - धीरज; योजना - कार्यक्रम।

अभ्यास

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) संभव की नाराजगी थी–

(i) पसंद की सब्जी न बनने पर (

(ii) रामलीला में मनचाही भूमिका न मिलने पर (

(ख) आलोक ने नितिन को कहा कि वह–

(i) कमज़ोर है ( ) (ii) बलवान है (

(ग) बुरे व्यक्ति में होते हैं–

(i) केवल दुर्गुण ( ) (ii) कुछ अच्छे गुण भी (

(घ) रावण महान भक्त था–

(i) विष्णु का ( ) (ii) शिव का (

2. किसने कहा–

(क) "चलो, अब अगली योजना कल बनाना।" ....

(ख) "हनुमान की भूमिका मेरी रखना।" ....

(ग) "मेरे पास जड़ाऊ कंगन, सितारों से जड़ी ओढ़नी व रेशमी साड़ी है।" ....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) रामचंद्र जी को इतना ऊँचा पद किसलिए मिला है?

....

....

(ख) नाश्ते में माँ ने क्या बनाया था?

.....

.....

(ग) रावण में क्या-क्या विशेषताएँ थीं?

.....

.....

(घ) रावण को सीता को चुराने का क्या परिणाम मिला?

.....

.....

1. पढ़ो और समझो–

(क) प्रेम, प्रीत, प्यार।

(ख) बल, शक्ति, ताकत।

(ग) दुर्बल, हीन, कमज़ोर।

(घ) ज्ञानी, पंडित, विद्वान

2. 'भक्त' शब्द जोड़कर लिखो–

(क) शिव + ·····भक्त····· – ·····शिव भक्त·····

(ख) गुरु + ····· – .....

(ग) देश + ····· – .....

(घ) मातृ + ····· – .....

(ङ) पितृ + ····· – .....

3. दिए गए शब्दों के दो-दो अर्थ लिखो–

(क) पर — ·····पंख·····, ·····लेकिन·····

(ख) हार — ....., ...

(ग) पत्र .....
.....

(घ) सोना .....
.....

(ङ) अंबर .....
.....

(च) भाग .....
.....

4. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो–

(क) संभव – .....

(ख) स्वभाव – .....

(ग) केसरिया – .....

(घ) बलशाली – .....

(ङ) योजना – .....

कुछ करने के लिए

- **क्या आपने कभी रामलीला में भाग लिया है? यदि हाँ, तो अपना अनुभव बताओ।**
- **रामचरित मानस की कुछ चौपाइयाँ लिखो–**

(क) .....
.....

(ख) .....
.....

(ग) .....
.....

देने का सुख

(चित्रकथा)

उफ माँ, ये मच्छर! बार-बार काट रहे हैं। कोई इनसे बचाओ। भगवान ने इन्हें बनाया ही क्यों...?

इनसे बचने के लिए तुम्हें साफ-सफाई का बहुत ध्यान रखना होगा और सफाई मेहनत से की जाती है, तुम्हें मेहनती बनाने के लिए ही ये बने हैं....।

माँ, आप तो हर बात को अलग ही ढंग से समझाती हैं। मैं तो ये सोच भी नहीं सकती थी।

हमारे आस-पास जो भी है, उससे हम कोई न कोई सबक सीख सकते हैं।

देखो, सूरज हमें चमकते रहने, प्रतिदिन समय से आने-जाने और सबका भला करने की प्रेरणा देता है।

और वह देखो चिड़िया, हमें हलका-फुलका चुस्त और व्यस्त होने के साथ-साथ बेफ्रिक होकर काम करना सिखाती है।

बेटी देखो, यह सुंदर गुलाब फूलों के बीच भी कितना सुंदर शानदार है। सबको अपनी महक लुटाता है इसीलिए सबका प्यारा है।

हाँ, पेड़ हमें छाया, फल औषधियाँ देते हैं, झरने पानी देते हैं, इसी प्रकार हमें भी सबको कुछ न कुछ देना चाहिए।

पर माँ, अगर हमारे पास कुछ न हो तो क्या दें?

वस्तु भले ही न हो पर हम सेवा तो कर ही सकते हैं। सत्कार और आदर तो देने में कोई खर्च नहीं आता। देने से अपार खुशी मिलती है।

आपने कितनी अद्भुत और अच्छी बातें बताईं, मैं भी सबकी सेवा-सहायता करूँगी।

3 प्रचार सभा

प्रकृति ने हमें स्वस्थ रखने के बहुत से तोहफे दिए हैं, सब्ज़ियाँ भी उनमें से एक है।

अध्यापन संकेत

- गीति नाटिका को गाने का आनंद लेकर पढ़ने को कहें और स्वास्थ्य में सब्ज़ियों की क्या भूमिका है, समझाएँ।

(गीति नाटिका)

- आजकल बच्चों में सब्जियों की अवहेलना करने की आदत ज़ोर पकड़ रही है. इसलिए यहाँ कुछ सब्जियाँ अपना-अपना प्रचार करने के लिए बुलाया गया है। पढ़ो और आनंद लो।

मैं हूँ तोरी,
क्या हुआ अगर-
मैं न हुई गोरी।
सेहत को मैं सही करूँ
जल्दी से मैं पच जाऊँ।

मेरा ग्लैमर और गोरापन
मुझको खास बनाता है।
मेरा पत्तेदार हरा लहँगा,
फ़हर-फ़हर लहराता है।

भेद की तरह कई परतें मेरी
एक एक कर खुलती हैं,
चटनी और मसाले बनते
हर सब्जी मेरे दम पर चलती है।

पेट में मेरे भरे हैं मोती
मेरे ले लो चटखारे।
सबको ही लुभाते हैं हम
हम तो जी सबके प्यारे।

मैं गोल गेंद जैसे ही छोटी
खाल मेरी लेकिन मोटी।
शर्बत में डालो या सलाद पर
कद्र नहीं कभी कम होती,
जी मिचलाने पर बनूँ औषधि
मुझमें भरपूर विटामिन-सी।

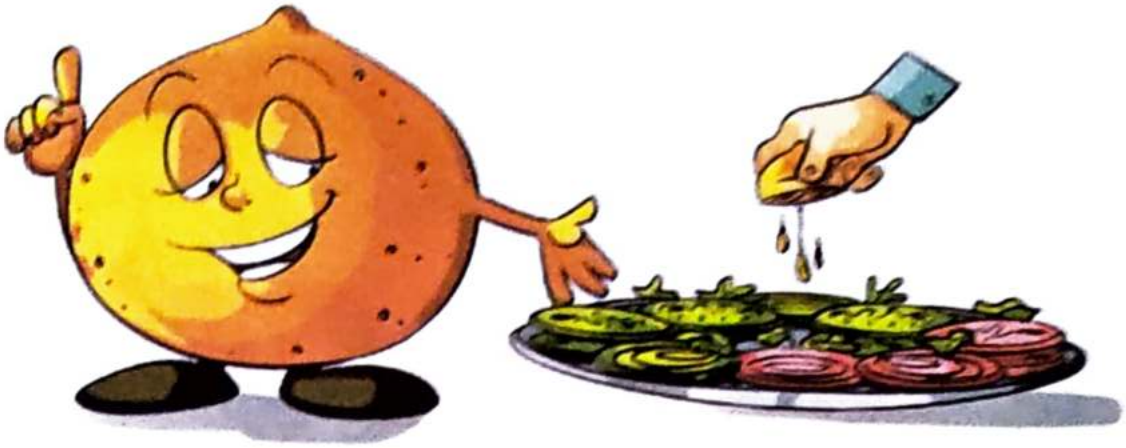

चिकनी त्वचा मुलायम हूँ
सिर पर मुकुट सजाता हूँ
मेरा भुरता खाकर देखो
बनकर सबको भाता हूँ।

हाय रे नाजुक जान हूँ मैं,
छैल-छबीली, दुबली-पतली।
लंबी चाहो बीच से काटो,
चाहो मुझको गोल बना लो।

आलू भैया की मैं बहना,
स्वाद मेरा का पूछो मत क्या कहना।
मैं बनकर सबको भाऊँ,
सबको चटखारे दिलाऊँ

शब्द-अर्थ पचना - हज़म होना; त्वचा - खाल; भेद - रहस्य, राज; ग्लैमर - बाहरी चमक-दमक।

अभ्यास

1. **सही उत्तर पर ✓ लगाओ–**

(क) तोरी पच जाती है–

(i) जल्दी से ( ) (ii) देर से ( )

(ख) बैंगन की त्वचा है–

(i) कठोर ( ) (ii) चिकनी ( )

(ग) नींबू में विटामिन है–

(i) ए ( ) (ii) सी ( )

(घ) अरबी ने स्वयं को बहन बताया–

(i) तोरी की ( ) (ii) आलू की ( )

2. **रिक्त स्थानों में उचित शब्द भरो–**

गोल-गेंद ....।

.... मोटी।

शर्बत में डालो ....।

.... कम होती।

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–**

(क) बैंगन क्या बनकर सबको भाता है?

....

....

(ख) भिंडी ने अपना परिचय किन शब्दों में दिया है?

....

....

(ग) पत्तेदार हरा लहँगा किसका है?

.....

.....

(घ) प्याज़ ने अपनी परतों को किस प्रकार खुलने की बात कही है?

.....

.....

भाषा की बात

1. तुक मिलाओ–

(क) तोरी – .....

(ख) चटखारे – .....

(ग) बनाता – .....

(घ) छोटी – .....

(ङ) खुलती – .....

(च) सजाता – .....

2. गहरे छपे शब्दों के स्थान पर उचित सर्वनाम लिखो–

(क) तोरी ने **तोरी** के गुण बताए।

.....

(ख) फूल को **फूल** की डाल से मत तोड़ो।

.....

(ग) हम **हमारे** घर में सब्जियाँ उगाते हैं।

.....

(घ) मुझे **मुझका** अनार दो।

.....

3. विलोम शब्द लिखो–

(क) खट्टा – .....

(ख) सफल – .....

(ग) दुर्बल – .....

(घ) सरल – .....

(ङ) कायर – .....

(च) समीप – .....

(छ) लाभदायक – .....

- इनके बारे में चार-चार पंक्तियाँ लिखो।

.....

.....

.....

.....

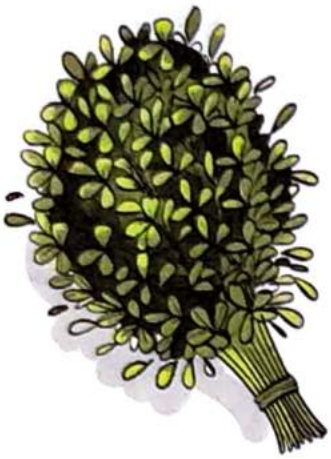

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

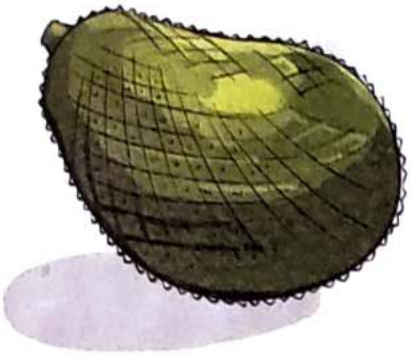

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

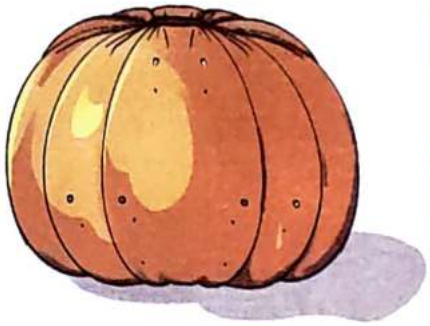

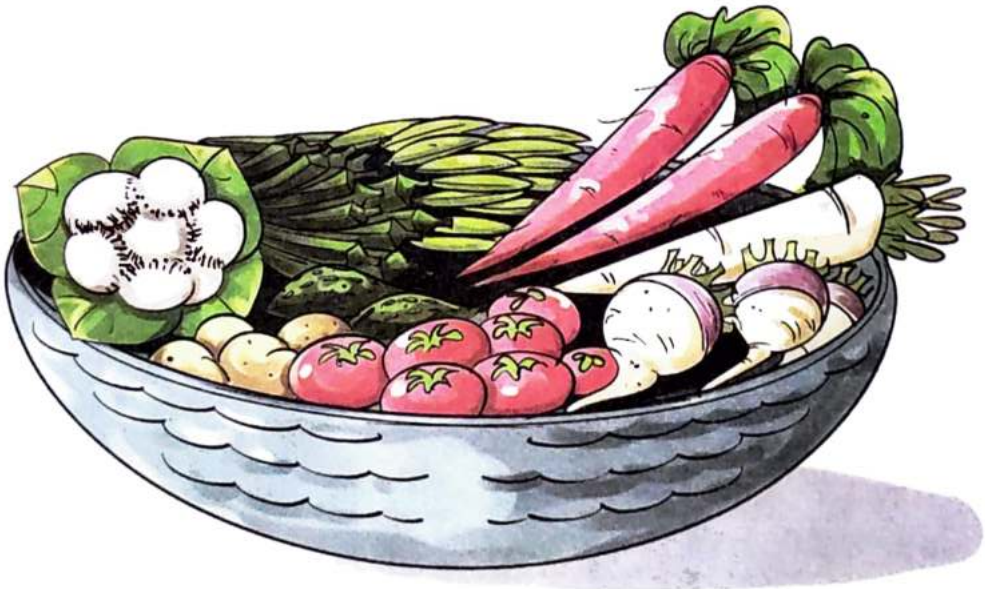

4 अद्भुत प्रकाश

शिक्षा का प्रकाश अद्भुत है, जो हर कठिनाई को सरल करता है।

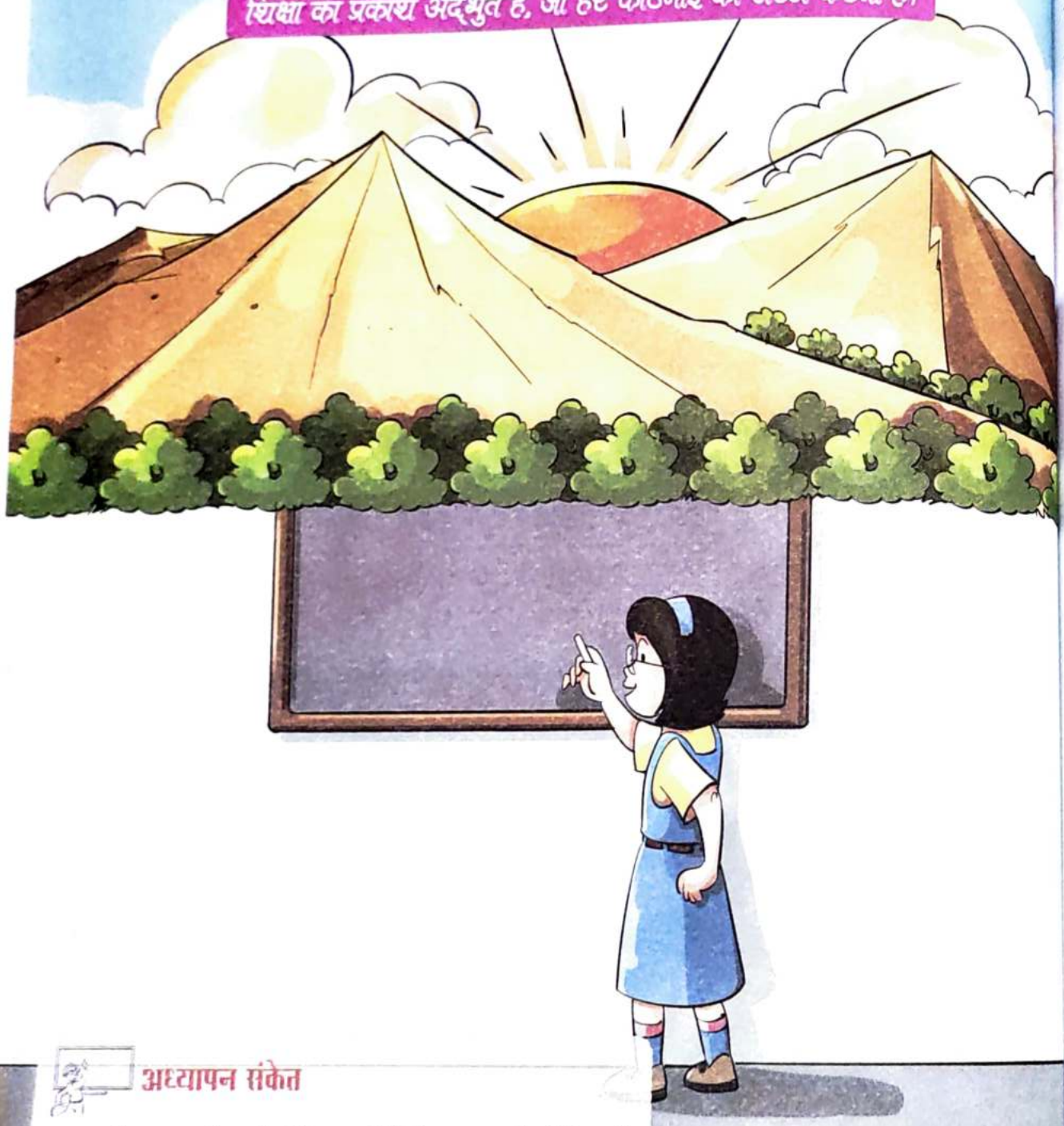

अध्यापन संकेत

- पाठ के माध्यम से बच्चों को निरक्षर लोगों को साक्षर बनाने की प्रेरणा दें।

(दैनिक प्रसंग)

- अंधेरे में भटकना स्वाभाविक है किंतु शिक्षा के अद्‌भुत प्रकाश से भटकना बंद हो जाता है और नई राहें मिल जाती हैं–

सुबह होते ही माँ घबराई-सी दीपा को उठा रहीं थीं। ''उठो-उठो, मैं महरी के घर जा रही हूँ। पता चला है कि उसका बेटा चल बसा है।'' ''हे भगवान! पर कैसे?'' दीपा ने पूछा।

''वह तो जाकर ही पता चलेगा।'' कहकर माँ मिसेज भल्ला के साथ ऑटो में बैठकर चली गई।

दोपहर हो गई थी। आज इतवार था। दीपा ने सोचा था कि आज मौज-मस्ती का दिन है पर यह तो बड़ी बुरी घटना हो गई।

कुछ घंटों बाद माँ लौटी तो बड़ी उदास थीं। दीपा के पूछने पर माँ ने बताया कि ''महरी के पति और बेटे दोनों को बुखार था पर चूँकि महरी पढ़ी-लिखी नहीं थी उसने गलती से अपने पति की दवा पुत्र को पिला दी। फलस्वरूप उसकी मृत्यु हो गई। बड़ा ही सुंदर तथा सलोना था उसका बेटा।'' यह कहकर माँ ने ठंडी साँस भरी।

सचमुच दीपा ने अनुभव किया कि यह सचमुच बड़ी दुखद बात है। शायद इसीलिए शिक्षा या पढ़ाई पर इतना ज़ोर दिया जाता है। दीपा ने मन ही मन कुछ निश्चय किया।

शाम को जब सब खेलने के लिए सामने पार्क में गए तो उसने अपने साथियों के सामने यह प्रस्ताव रखा कि ''क्यों न सब बच्चे मिलकर छुट्टी वाले दिन गरीब बच्चों, स्त्रियों व पुरुषों को कुछ घंटे पढ़ाएँ!''

सुनकर सभी ने हर्ष ध्वनि की। बस फिर क्या था, ज़ोर-शोर से काम की योजना बन गई। पास की एक धर्मशाला में अनुमति से निःशुल्क कक्षाएँ चलाने की प्रक्रिया शुरू हो गई।

इतवार को दोपहर तीन बजे से पाँच बजे का समय इन कक्षाओं में पढ़ाई चलेगी, यह तय हुआ।

सब बच्चे अपने-अपने घर से खाली पड़ी कॉपियाँ, पेंसिलें, पेन और जो भी पुरानी पुस्तकें थीं, उन्हें वहीं लाकर जमा कराने लगे। हर घर में प्रारंभिक कक्षाओं की पुस्तकें थीं ही जो छोटे भाई-बहनों ने पढ़कर यूँ ही रख दी थी, उन सबको जमा किया गया।

फिर बच्चे समूह में जाकर शिक्षा के महत्व को मजदूरों, कूड़ा चुनने वाले लोगों, घरेलू साफ-सफाई करने वाले लोगों को समझाने लगे।

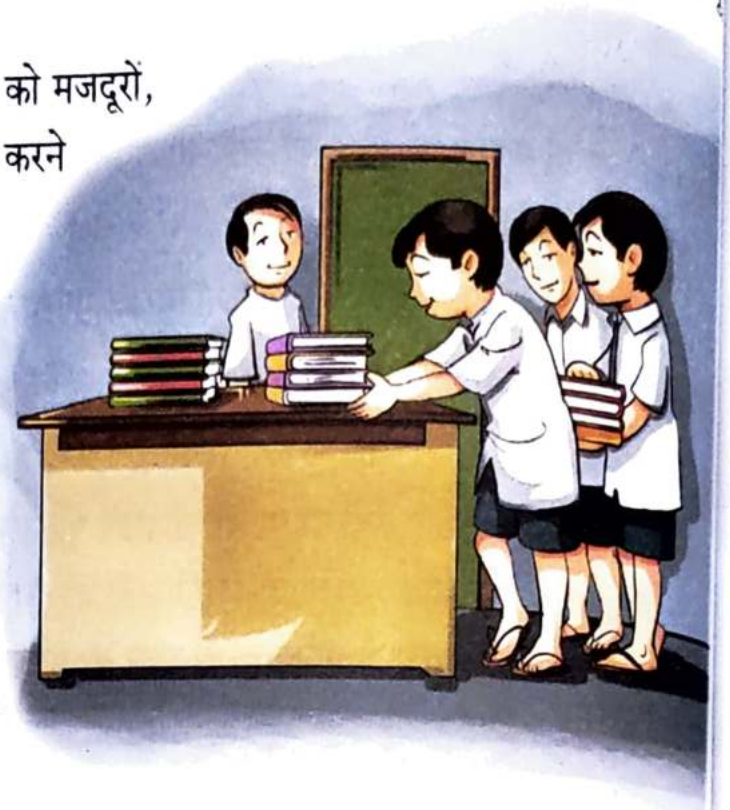

जानकारी पाकर वे लोग दौड़े आए और लगन से पढ़ने लगे। बच्चों को भी उन्हें पढ़ाने में बड़ा आनंद आ रहा था। विद्यालय में जब इस बात का पता चला तो बच्चों की उनके अध्यापकों ने पीठ थपथपाई।

अब विद्यालय का नाम और बच्चों का काम हर एक की जुबान पर था।

शब्द–अर्थ

महरी - घरेलू सेविका; फलस्वरूप - परिणाम के रूप में; हर्ष ध्वनि - खुशी का स्वर; अनुमति - स्वीकृति।

अभ्यास

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) माँ को जाना था–

(i) बाज़ार ( ) (ii) महरी के घर ( )

(ख) महरी के बेटे की मुत्यु–

(i) गलत दवाई पिलाने से हुई ( ) (ii) दुर्घटना से हुई ( )

(ग) महरी का बेटा था–

(i) बदसूरत ( ) (ii) सुंदर तथा सलोना ( )

(घ) दीपा ने गरीब बच्चों को पढ़ाने के लिए तय किया–

(i) प्रतिदिन ( ) (ii) छुट्टी के दिन ( )

2. रिक्त स्थानों में उचित शब्द भरो–

(क) दीपा का प्रस्ताव सुनकर सभी ने ..... की। (चिंता/हर्षध्वनि)

(ख) नि:शुल्क कक्षाएँ ..... में चलाई गईं। (पार्क/धर्मशाला)

(ग) मजदूरों आदि को बच्चों ने ..... का महत्व बताया (शिक्षा/धन)

(घ) बच्चों को पढ़ाने में बड़ा ..... आ रहा था। (आनंद/पसीना)

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) महरी ने अपने बेटे को गलत दवा क्यों दे दी?

.....

.....

(ख) दीपा ने बच्चों के सामने क्या प्रस्ताव रखा?

.....

.....

(ग) पढ़ाई के लिए आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था कैसे की गई?

.....

.....

(घ) बच्चों के काम का लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा?

.....

.....

भाषा की बात

1. पाठ में आए इन वाक्यांशों का प्रयोग अपने वाक्यों में करो–

(क) चल बसना – .....

.....

(ख) हर्ष-ध्वनि करना – .....

(ग) नाम जुबान पर होना – .....

(घ) ठंडी साँस भरना – .....

2. शब्दों को उनके समानार्थी शब्दों से जोड़ो–

शब्द	समानार्थी
(क) बेटा	(i) निधन
(ख) निश्चय	(ii) औरत
(ग) मृत्यु	(iii) बगीचा
(घ) हर्ष	(iv) तय
(ङ) पार्क	(v) पुत्र
(च) स्त्री	(vi) खुशी

3. वाक्य शुद्ध करो–

(क) हो तैयारी गई खोलने विद्यालय की।

.....

(ख) थी रही हो प्रसन्नता काम इस में।

.....

(ग) गए हो तैयार सभी के लिए करने सहयोग।

.....

(घ) था नाम जुबान की पर लोगों का विद्यालय।

.....

4. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन लिखिए–

(क) बेटा – ..... (ख) घंटा – .....

(ग) गलती – ..... (घ) घटना – .....

(ङ) कक्षा – ..... (च) पुस्तक – .....

(ख) हर्ष ध्वनि करना – .....

(ग) नाम जुबान पर होना – .....

(घ) ठंडी साँस भरना – .....

2. शब्दों को उनके समानार्थी शब्दों से जोड़ो–

शब्द	समानार्थी
(क) बेटा	(i) निधन
(ख) निश्चय	(ii) औरत
(ग) मृत्यु	(iii) बगीचा
(घ) हर्ष	(iv) तय
(ङ) पार्क	(v) पुत्र
(च) स्त्री	(vi) खुशी

3. वाक्य शुद्ध करो–

(क) हो तैयारी गई खोलने विद्यालय की।

.....

(ख) थी रही हो प्रसन्नता काम इस में।

.....

(ग) गए हो तैयार सभी के लिए करने सहयोग।

.....

(घ) था नाम जुबान की पर लोगों का विद्यालय।

.....

4. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन लिखिए–

(क) बेटा – .....

(ख) घंटा – .....

(ग) गलती – .....

(घ) घटना – .....

(ङ) कक्षा – .....

(च) पुस्तक – .....

कुछ करने के लिए

आप भी अपने आस-पड़ोस के निर्धन व अशिक्षित बच्चों को पढ़ाने का प्रयास करो तथा अपने अनुभव कक्षा में बताओ।

आपके पास भी कुछ पुस्तकें, कॉपियाँ व अन्य पठन सामग्री फालतू पड़ी होंगी। सब बच्चे मिलकर ऐसी सामग्री एकत्र करो और जरूरतमंदों में वितरित करो।

'शिक्षा का महत्व' विषय पर एक अनुच्छेद लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5 भारत की एकता

भारत की संस्कृति एक महासागर की तरह है, इसके बारे में जितना जानो, उतना ही कम

अध्यापन संकेत

- विद्यार्थियों को बताएँ कि किस प्रकार भारतीय संस्कृति के प्रति सभी महान व्यक्तियों का आकर्षण रहा है।

- भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू जी एक उच्चकोटि के लेखक भी रहे हैं। यहाँ भारत और भारतीय संस्कृति पर उन्होंने जो कुछ लिखा है, उसके कुछ अंश दिए जा रहे हैं।

भारत के इतिहास में दो बातें अजीब हैं। एक तो यहाँ की संस्कृति और दूसरी एकता। हमारी बड़ी-बड़ी पुस्तकों जैसे- महाभारत, रामायण और ऐसी ही अन्य पुस्तकों ने भारतीय संस्कृति पर अपने-अपने ढंग से भारी असर डाला है। उसके बाद एक आम संस्कृति फैली, हालांकि उसने भारत के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग पोशाक पहन ली, लेकिन बुनियाद वही है। बावजूद इसके कि भारत में पचास राजनीतिक टुकड़े रहे, इस बात को हमें हमेशा याद रखना है कि बहुत पुराने ज़माने में भी भारतीय भू-भाग राजनीति के हिसाब से एकीकृत देश के रूप में कम ही रहा है। तब भारत क्या था, कहाँ तक था। ऊपर का हिस्सा आर्यावर्त था या ब्रह्मवर्त था। यह हिस्सा बढ़ रहा था लेकिन जिसे आज हम हिंदुस्तान कहते हैं, यह बड़े-से-बड़े समय यानि अशोक के समय में भी पूरा एक नहीं हुआ था। इसमें थोड़ा-सा रह गया था। उसके बाद देश के फिर टुकड़े हो गए। हमारे यहाँ राजनीति देश को जोड़ती नहीं थी। राजनीति के ख्याल से भारत को जोड़ने का विचार पिछले ज़माने में बहुत कमज़ोर रहा है।

आप देखिए, भारत के लोग कहाँ-कहाँ जाते थे। वे सारी दुनिया में घूमते थे। दूसरे मुल्कों में वे अपना धर्म ले गए। अपना धर्म से मतलब बौद्ध धर्म से है, क्योंकि हिंदू धर्म तो बाहर बहुत कम गया। भारत से धर्म लेकर वे चीन, जापान, मंगोलिया और सारे मध्य एशिया में फैले। भारतीय समुद्र पार करके, पर्वत पार करके, इधर बर्मा (म्यांमार) वगैरह में और उधर पश्चिम में गए। उनके सामने कोई रुकावट नहीं थी। पिछले दो सौ, तीन सौ वर्षों से जाति की रुकावट हो गई है- अरे बाहर न जाओ, बाहर जाने से धर्म भ्रष्ट हो जाएगा। हमारे पूर्वज बहुत साहसी थे। उनके सामने कोई रुकावट नहीं थी, वे दुनिया में निडर होकर घूमते थे। अपनी कला को लेकर, अपनी भाषा को लेकर, वे देश-विदेश जाते थे। संस्कृति को वे दूर-दूर तक ले गए। दूर के देशों में जब भी आप जाएँ, इंडोनेशिया जाएँ, मंगोलिया जाएँ, दूर-दूर के और देशों में जाएँ, वहाँ आपको ढेरों संस्कृत शब्द मिलते हैं।

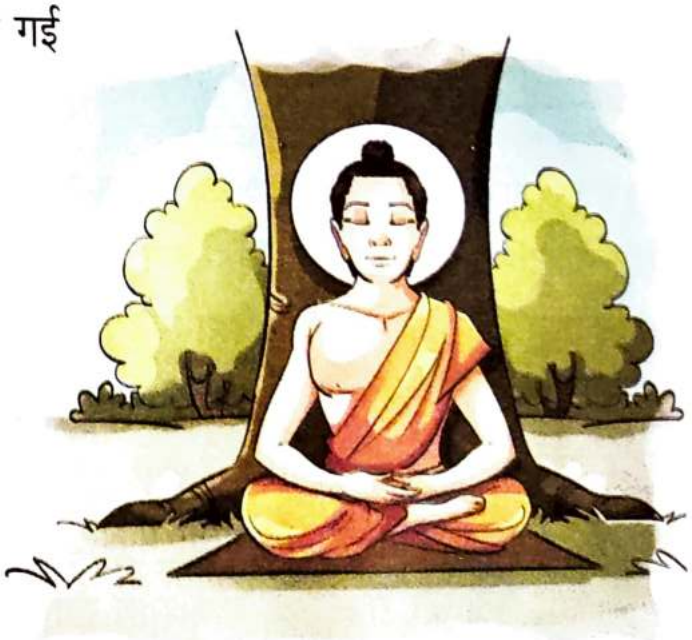

डेढ़ हजार वर्ष हो गए, हमारे पूर्वज मंगोलिया गए थे। मंगोलिया के इतिहास में लिखा है कि भारत से एक बड़ा आदमी आया, उसने मंगोलिया की एक राजकुमारी से विवाह किया और उससे मंगोलिया का राज खानदान शुरू हुआ। अब तक वे कहते हैं, वह एक भारतीय आदमी था, उसने वहाँ का राजवंश शुरू किया। अब तक आजाद मंगोलिया का जो झंडा है, उसका नाम है शायद स्वयंभू। यह संस्कृत का शब्द है। देखिए, कहाँ-कहाँ जा पहुँचा यह। इसकी आपको मैंने एक मिसाल दी। यही बात कंबोडिया वगैरह सभी मुल्कों में है। आप भारत को और जानना चाहते हैं तो भारत के बाहर जाकर पुराने भारत की निशानियाँ देखिए– उसकी कलाओं की, उसकी विद्या की और उसकी भाषा की। उसकी कितनी ही बातें और देशों में पहुँचीं। वहाँ जो सबसे बड़े मशहूर मंदिर हैं, वे भारत के लोगों के बनाए हुए हैं। अंकोरवाट, कंबोडिया में या इंडोनेशिया में। एक तो भारत का वह ज़माना था, जब उसमें जान थी। भारत के लोगों में जान थी, बुद्धि थी, दम था, हिम्मत थी, वे दूर-दूर जाते थे।

बाद में एक ज़माना आया, हम सब जकड़ गए, अपनी जात-पात के पिंजरे में बंद हो गए, यहाँ से वहाँ नहीं जाओ, उसके साथ खाना न खाओ, इसके साथ विवाह न करो, उसको छुओ नहीं, वगैरह। जरा देखिए, कितना अंतर हो गया। एक युग था कि भारत के लोग दुनिया में घूमते थे, दूसरे युग में उसी भारत के लोग एक-दूसरे से ही टकराने लगे। हमारे समाज का संगठन अजीब था, वह एक-दूसरे को जोड़ता भी था और एक-दूसरे से अलग भी करता था। हमारा जाति-भेद एक अनोखी चीज़ है। दुनिया में और कहीं यह बात नहीं थी। हज़ार दो हज़ार बरस हुए यह शुरू हुआ था, लेकिन शायद इस प्रकार का नहीं था, जैसा अब है। वह बहुत लचीला था। उस समय की हालत के लिए शायद वह उचित हो, मैं नहीं कह सकता। लेकिन इसमें कोई शक नहीं है कि ज्यों-ज्यों यह बढ़ा, यह अधिक कठोर और कट्टर होता गया। धीरे-धीरे एक दीवार बन गई, देश की एकता में यह रुकावट बन गई। देश के नागरिक अलग-अलग भागों में बँट गए। लोग मिलते नहीं थे; मिल नहीं सकते थे, आपस में शादी-ब्याह नहीं कर सकते थे, एक साथ खा नहीं सकते थे, एक-दूसरे को छू नहीं सकते थे। यहाँ के

हालात अजीब हो गए हैं, जिसमें आप और हम पैदा हुए हैं और रहते हैं। हमें उसका अजीबपन मालूम नहीं होता, लेकिन दुनियावालों के लिए यह आश्चर्य की बात है। दुनिया के लोग समझ ही नहीं सकते कि मामला क्या है। यह बात उनके दिमाग में नहीं आती, उन्हें अनोखी मालूम होती है। हम और आप इस हालत को देखते हैं, इसमें रहते हैं, शादी-ब्याह करते हैं, खाते-पीते हैं या एक-दूसरे के साथ नहीं खाते-पीते हैं, हमें यह बड़ी मामूली बात लगती है। लेकिन बाहर का आदमी—चाहे एशिया का हो, चाहे अमेरिका का, चाहे अफ्रीका का, चाहे यूरोप का—उसे यह एक अजीब बात मालूम होती है। यह मामला क्या है, उसकी समझ में नहीं आता। यह अनोखापन है। मेरी राय में यह जात-पात एक रुकावट के रूप में आई, जिसने देश की एकता में रुकावट डाली। यह एक बुराई है, जो समाज को तोड़ती है, उसे मिलाती नहीं है।

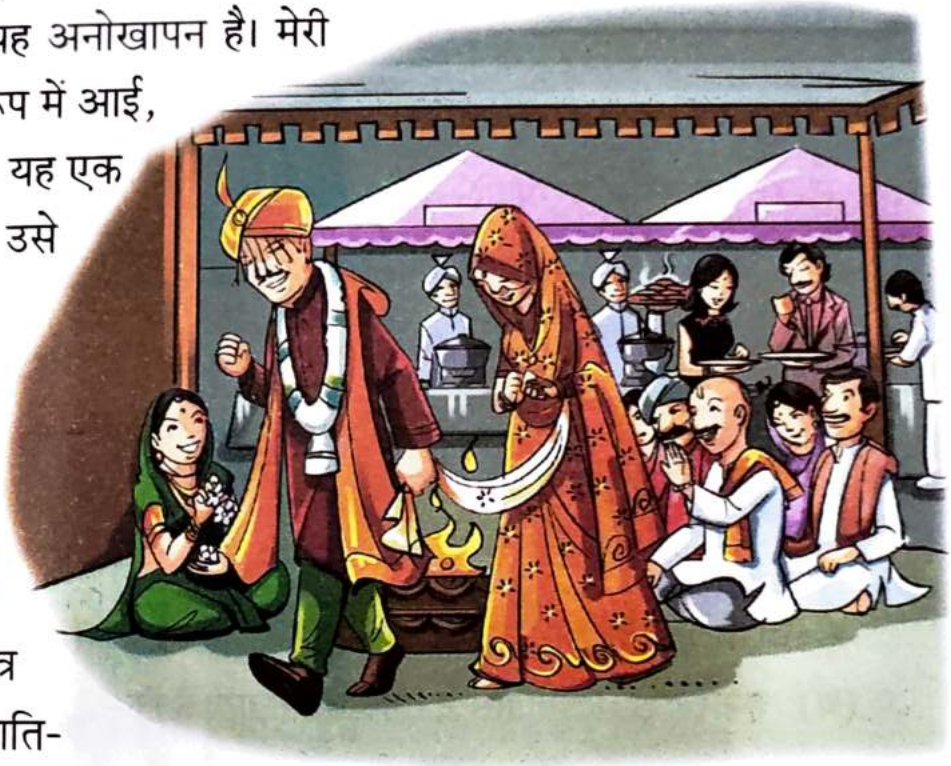

मैं समझता हूँ कि भारत में एक मायने में सबसे खराब चीज़ यहाँ की जाति प्रथा है। हम-आप बहस करते हैं, कभी प्रजातंत्र की, समाजवाद की और न जाने किस-किस की? इन सबमें चाहे प्रजातंत्र हो, चाहे समाजवाद हो, उनमें कहीं भी जाति-प्रथा नहीं आ सकती। वह सभी प्रकार की प्रगति की घोर विरोधी है। जात-पात में रहते हुए आप न तो समाजवाद पर पहुँच सकते हैं, और न सच्चे प्रजातंत्र पर। जाति प्रथा देश तथा समाज के टुकड़े करके उसे ऊपर-नीचे और अलग-अलग भागों में बाँटती है। इस तरह वह मिलाने का नहीं बल्कि विभाजन का कारण बनती है। आज वह एकदम पुरानी और हानिकारक बन गई है।

एक ज़माना था, जब भारत बहुत ऊँचा पहुँचा हुआ था। लोग आज़ादी से दुनिया-भर में आते-जाते थे। अपनी बुद्धि से, अपनी शक्ति से और भारत की शक्ति से दुनिया के लोगों को प्रभावित करते थे। फिर एक ज़माना वह आया जब हम जात-पात में पड़ गए तथा अब तक पड़े हुए हैं। मैंने अपने देश की जाति-भेद वगैरह की वे कमज़ोरियाँ बताई, जिनसे हम गिर गए। लेकिन हमारे देश का इतिहास हमें यह सिखाता है कि धर्म के मामले में हमें एक-दूसरे से मिलकर रहना चाहिए।

—जवाहरलाल नेहरू

शब्द-अर्थ

पोशाक - वेशभूषा; बुनियाद- नींव; राजनीतिक - राजनीति से संबंधित; मुल्क - देश; पूर्वज - पुरखे; स्वयंभू - भगवान शंकर जो स्वयं उत्पन्न हुए; मिसाल - उदाहरण; युग - काल; जाति-भेद - जातियों के अंतर; लचीला - आसानी से झुकने वाला; कट्टर - अपने मन का कठोरता से पालन करने वाला; प्रजातंत्र - ऐसा शासन जिसमें जनता के हितों की रक्षा की जाती है; समाजवाद - समाज की व्यवस्था जिसमें सब लोगों के समान हितों का ध्यान रखा जाता है।

अभ्यास

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) भारत से सारे विश्व में गया–

(i) हिंदू धर्म ( ) (ii) बौद्ध धर्म ( )

(ख) हमारे पूर्वज थे–

(i) साहसी ( ) (ii) डरपोक ( )

(ग) हमारे देश की एकता में रुकावट बना–

(i) जाति-भेद ( ) (ii) रंग-भेद ( )

(घ) हमारे देश के इतिहास ने हमें यह सिखाया है कि–

(i) अलग-अलग रहो ( ) (ii) मिल-जुलकर रहो ( )

2. रिक्त स्थानों में उचित शब्द भरो–

(क) नेहरू जी ने देश की ..... की बात की है। (भक्ति/संस्कृति)

(ख) हमारे पूर्वज डेढ़ हजार वर्ष पहले ..... गए थे। (मंगोलिया/अमेरिका)

(ग) जाति-भेद एक ..... चीज है। (मामूली/अनोखी)

(घ) ..... को लेखक ने सबसे खराब चीज कहा है। (विवाह प्रथा/जाति प्रथा)

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) भारतीय संस्कृति पर किन पुस्तकों ने भारी प्रभाव डाला?

.....

.....

(ख) हमारे देश और समाज के टुकड़े किन कारणों से हो गए?

.....

.....

(ग) संस्कृत के शब्द किन-किन देशों की भाषा में मिलते हैं?

.....

.....

भाषा की बात

1. वाक्यों को निर्देश में दिए हुए काल में लिखो–

(क) भाषा समय के अनुसार बदलती रही थी। (वर्तमान)

.....

(ख) हम बर्मा जाते हैं। (भविष्यत्काल)

.....

(ग) हमारे पूर्वज विदेशों में जाते हैं। (भूतकाल)

.....

2. 'इत' प्रत्यय जोड़कर शब्द बना है 'प्रभावित'। इसी प्रकार 'इत' प्रत्यय जोड़कर लिखो–

(क) आलोक .....

(ख) प्रकाश .....

(ग) सुसज्ज .....

(घ) लज्जा .....

(ङ) पीड़ा .....

3. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध करो–

(क) परधानमनतरी .....

(ख) पूरवज .....

(ग) वीदेश .....

(घ) जातीपरथा .....

4. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में करो–

(क) संस्कृति – .....

(ख) बुनियाद – .....

(ग) राजनीति – .....

(घ) मिसाल – .....

(ङ) उचित – .....

5. निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से सुमेल करो–

(क) एकता	(i) अधर्म
(ख) धर्म	(ii) गुलाम
(ग) पूर्व	(iii) अनेकता
(घ) आजाद	(iv) लाभदायक
(ङ) हानिकारक	(v) पश्चिम

कुछ करने के लिए

- नेहरू जी की जीवनी ढूँढ़कर पढ़ो।
- 'जाति प्रथा से हानियाँ' विषय पर एक अनुच्छेद लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

'जाति प्रथा एक कलंक है।' विषय पर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन करो।

6 किताबें

किताबों का संसार अनोखा है, इसके आनंद को इसमें डूबने वाला ही जानता है।

अध्यापन संकेत

- कविता के माध्यम से बच्चों को अधिक-से-अधिक किताबें पढ़ने की प्रेरणा दें।

(कविता)

- भले ही ज्ञान प्राप्ति के कितने ही आधुनिक साधन क्यों न आ जाएँ, किताबों का महत्व हमेशा था, है और रहेगा, इसी भाव की पुष्टि इस कविता में की गई है—

किताबें
करती हैं बातें
बीते ज़माने की,
दुनिया की, इंसानों की।

आज की, कल की
एक-एक पल की,
खुशियों की, गमों की,
फूलों की, बमों की,
जीत की, हार की,
प्यार की, मार की।

क्या तुम नहीं सुनोगे
इन किताबों की बातें?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं,
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं,
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं,
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं,
परियों के किस्से सुनाते हैं।

किताबों में रॉकिट का राज है,
किताबों में साइंस की आवाज़ है,
किताबों का कितना बड़ा संसार है,
किताबों में ज्ञान की भरमार है।

क्या तुम इस संसार में
नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं,
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

—सफ़दर हाशमी

ज़माना - **समय;** इंसानों - **मनुष्यों;** ग़मों - **दुखों;** राज़ - **रहस्य;** साइंस - **विज्ञान।**

1. **सही उत्तर पर ✓ लगाओ–**

(क) किताबें बातें करती हैं–
(i) हर विषय पर ( ) (ii) केवल साहित्य की ( )

(ख) किताबों में भरमार है–
(i) ज्ञान की ( ) (ii) धन की ( )

(ग) किताबें चाहती हैं–
(i) चुप रहना ( ) (ii) कुछ कहना ( )

(घ) किताबों का संसार है–
(i) बहुत बड़ा ( ) (ii) सीमित ( )

2. **कविता पढ़कर पंक्तियाँ पूरी करो–**

(क) किताबो में चिड़ियाँ .....

..... लहलहाती हैं।

किताबों में झरने .....

..... सुनाते हैं।

(ख) किताबों में .....

..... आवाज़ है,

किताबों का कितना .....

..... भरमार है।

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–**

(क) किताबें हमसे किन-किन विषयों पर बातें करना चाहती हैं?

.....

.....

(ख) किताबें किसके पास रहना चाहती हैं?

.....

.....

(ग) किताबों में किसके राज और किसकी आवाज़ है?

.....

.....

(घ) किताबें अपने अंदर क्या-क्या समेटे हुए हैं?

.....

.....

भाषा की बात

1. **तुक मिलाओ–**

(क) चहचहाती – .....

(ख) हार – .....

(ग) गुनगुनाते – ..... (घ) गमों – .....

(ङ) कल – ..... (च) कहना – .....

2. अलग-अलग शीर्षकों के नीचे लिखो–

आवाज़, स्वर, इंसान, मनुष्य, खुशी, प्रसन्नता, हार, पल, पास, समीप, पराजय, क्षण।

(अध्यापक महोदय से सहायत लें।)–

हिंदी	उर्दू
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

3. बहुवचन लिखो–

(क) चिड़िया – ..... (ख) किस्सा – .....

(ग) खेती – ..... (घ) खुशी – .....

(ङ) झरना – ..... (च) बात – .....

4. निम्नलिखित वाक्यों को सही करके लिखो–

(क) किताबें केवल खुशियों की बातें करती हैं।

.....

(ख) किताबें कुछ कहना नहीं चाहती।

.....

(ग) किताबें चिड़ियों के पास रहना चाहती हैं।

.....

(घ) किताबों का संसार बहुत छोटा है।

.....

5. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो–

(क) दुनिया – .....

(ख) जीत – .....

(ग) राज़ – .....

(घ) संसार – .....

(ङ) ज्ञान – .....

कुछ करने के लिए

- 'पुस्तकों का महत्व' विषय पर एक अनुच्छेद लिखो–

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- आपने पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त भी कुछ पत्रिकाएँ आदि पढ़ी होंगी, कुछ पत्रिकाओं के नाम लिखो।

....

....

....

स्वामी विवेकानंद

(जीवन परिचय) पठन हेतु

स्वामी विवेकानंद को कौन नहीं जानता! वही विवेकानंद, जिन्होंने सन् 1893 में शिकागो (अमेरिका) में आयोजित सर्वधर्म सम्मेलन में ओजपूर्ण भाषण देकर संपूर्ण विश्व को हैरान कर दिया था। आगे चलकर उन्होंने सभी धर्मों के एक होने की बात विभिन्न धर्मों को मानने वालों के समक्ष रखी और इसलिए उन्हें संपूर्ण विश्व में इतना सम्मान मिला।

स्वामी विवेकानंद का जन्म कोलकाता के एक संभ्रांत परिवार में 12 जनवरी 1863 को हुआ था। उनके अनोखे व्यक्तित्व की झलक उनके पिता विश्वनाथ दत्त को पहले ही मिल गई थी तभी तो उन्होंने अपने पुत्र का नाम नरेंद्र रखा था।

जब नरेंद्र कॉलेज में पढ़ रहे थे तब एक बार उन्होंने रामकृष्ण परमहंस का नाम सुना। रामकृष्ण परमहंस एक बहुत पहुँचे हुए महात्मा और ज्ञानी पुरुष थे। उनके शिष्यों में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग थे। संयोगवश, उन्हीं दिनों नरेंद्र के एक पड़ोसी सुरेन बाबू ने उन्हें बताया कि रामकृष्ण परमहंस उनके घर आने वाले हैं। नरेंद्र ने विनती की कि वह भी उनके दर्शन करना चाहते हैं। सुरेन बाबू ने उन्हें बताया कि स्वामी जी को गीत बहुत पसंद हैं, क्यों न नरेंद्र उन्हें कोई गीत गाकर सुनाएँ और इस प्रकार उनसे परिचय प्राप्त करें। नरेंद्र इस बात के लिए तुरंत राज़ी हो गए और वह दिन भी आ पहुँचा जब नरेंद्र ने सुरेन बाबू के यहाँ जाकर स्वामी जी को मधुर स्वर में 'चल रे मन, निज निकेतन' नामक गीत सुनाया। गीत सुनकर रामकृष्ण परमहंस भाव-विभोर हो गए। उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। जब गीत समाप्त हुआ तो स्वामी जी नरेंद्र से बोले, "कभी दक्षिणेश्वर आओ।" दक्षिणेश्वर कोलकाता के समीप वह स्थान है जहाँ गंगा के किनारे माँ काली के मंदिर में रामकृष्ण परमहंस रहते थे।

कुछ समय बाद वह रामकृष्ण परमहंस से मिलने दक्षिणेश्वर गए। नरेंद्र को देखकर रामकृष्ण बहुत प्रसन्न हुए। उन दोनों के बीच कुछ पल तक बातचीत होती रही। तभी नरेंद्र ने स्वामी रामकृष्ण से पूछा– "जगत में अलग-अलग धर्म क्यों हैं? क्या हर धर्म का भगवान अलग होता है?"

प्रश्न सुनकर रामकृष्ण परमहंस मुस्कराए। रामकृष्ण परमहंस किसी पाठशाला में कभी नहीं पढ़े थे लेकिन अपनी भक्ति, पूजा और साधना से उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था। वह हमेशा अपने भक्तों को साधारण भाषा में उदाहरण देकर अपनी बात समझा देते थे। नरेंद्र का प्रश्न सुनकर रामकृष्ण ने जल से भरे एक बर्तन की ओर इशारा किया और बोले, "इस बर्तन में जल भरा है। इसे कुछ लोग 'जल' कहते हैं, कुछ लोग 'पानी' कहते हैं। इसे चाहे जो नाम दे दो पर यह तो वही रहता है और एक ही काम करता है, यानी प्यास बुझाना। इसी प्रकार ईश्वर भी एक है, केवल लोग उसे अलग-अलग नामों से पुकारते हैं।"

नरेंद्र ने जब उनसे पूछा कि ईश्वर साकार है या निराकार तो रामकृष्ण परमहंस बोले, "जल जब बर्फ़ बनकर जम जाता है तो वह साकार हो जाता है, दिखाई देता है। जब उसे भाप बना देते हैं तो वह दिखाई नहीं देता और जब वह किसी बर्तन में रखा जाता है तो वह उस बर्तन का आकार ग्रहण कर लेता है। इसी प्रकार ईश्वर हर मनुष्य में निवास करता है, वह अलग-अलग व्यक्तियों के विश्वास के अनुसार अलग-अलग रूपों में दिखाई देता है। वास्तव में ईश्वर एक ही है।"

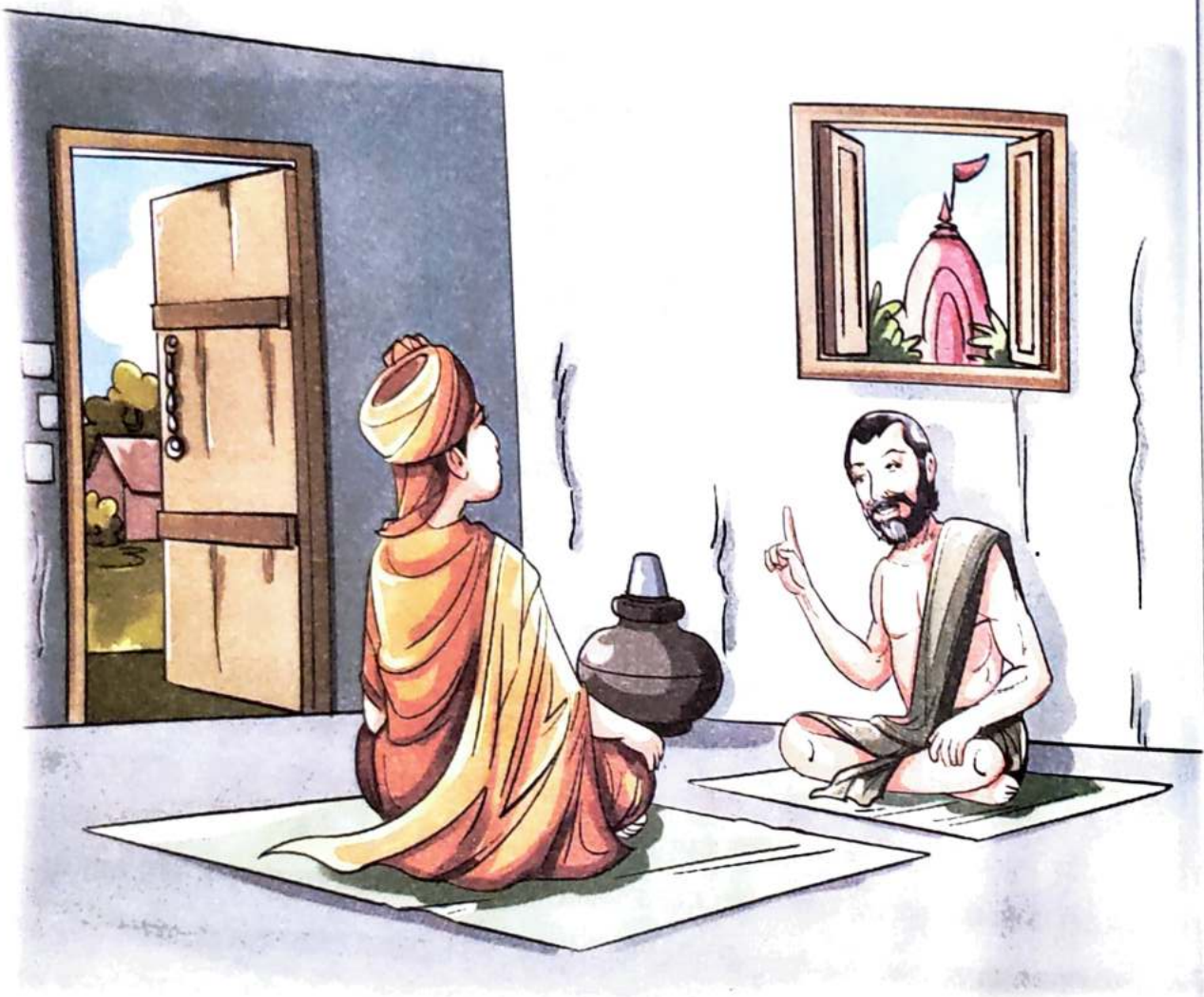

नरेंद्र यह बात अच्छी तरह समझ गए। अपनी पढ़ाई पूरी करके वे रामकृष्ण परमहंस के शिष्य बन गए। उनके गुरु ने उनका नाम स्वामी विवेकानंद रखा। रामकृष्ण परमहंस ने उन्हें मानवता की सेवा करने और भारतवर्ष की जनता को जगाने का काम सौंपा। स्वामी रामकृष्ण ने उनसे कहा कि समस्त जीवधारियों को, चाहे वे पेड़-पौधे हों, चाहे अन्य जीव या फिर मनुष्य हों, सभी को ईश्वर का अंश मानकर उनकी सेवा करो। उनकी सेवा ही ईश्वर की सच्ची भक्ति और पूजा है। इस प्रकार, रामकृष्ण परमहंस की शिक्षा ने स्वामी विवेकानंद के मन में सेवाधर्म का अंकुर रोप दिया।

स्वामी विवेकानंद तथा उनके शिष्य जाति-पाँति का विचार किए बिना हर घर से भिक्षा माँगते थे। थोड़े समय के बाद

ही उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस ने इस संसार से विदा ली और मानव-सेवा का कर्तव्य स्वामी विवेकानंद और उनके साथियों पर छोड़ गए।

स्वामी विवेकानंद और उनके शिष्यों ने मिलकर 'रामकृष्ण मठ' नामक एक संस्था बनाई और इस संस्था के माध्यम से सेवा-कार्य में जुट गए। बरा नगर में लोगों ने एक टूटा-फूटा मकान उन्हें दान में दे दिया। वहीं उनका पहला मठ बना। भिक्षा माँगकर वे लोग वहीं आते और अपने काम को आगे बढ़ाने के बारे में सोच-विचार करते। कभी आधा पेट खाना मिलता, कभी वह भी नहीं। सज्जन भक्त बीच-बीच में आकर मठ के खर्च के लिए दान दे जाते। इस प्रकार धीरे-धीरे उनका मानव-सेवा का कार्य आगे बढ़ने लगा।

स्वामी विवेकानंद ने संपूर्ण भारतवर्ष की यात्रा की। यात्रा के दौरान भारत की जनता की गरीबी और कष्ट देखकर उनके मन में सेवाभाव और भी दृढ़ हुआ। उन्होंने अमेरिका में होने वाले सर्वधर्म सम्मेलन में भी भाग लिया और यूरोप के अन्य देशों की भी यात्रा की। स्वामी विवेकानंद अपने विचारों के कारण विदेशों में बहुत प्रसिद्ध हो गए थे। बहुत-से धनी लोग उनसे प्रभावित होकर उनके शिष्य बन गए थे। उन्होंने अमेरिका व इंग्लैंड में मठों की स्थापना की। इसके बाद, भारत लौटकर उन्होंने एक बार फिर पूरे देश की यात्रा की। स्वामी विवेकानंद ने एक ही मंत्र देश के युवक-युवतियों को दिया, "आने वाले पचास वर्षों तक मातृभूमि को ही अपना आराध्य मानो। इस मातृभूमि पर रहने वाले प्रत्येक प्राणी को प्यार करो, उसकी सेवा करो, तभी इस जन्मभूमि की दासता की बेड़ियाँ टूटेगी।।"

उनके आह्वान पर सैकड़ों युवक-युवतियाँ इस काम में लग गए। धन की भी कोई कमी नहीं रही। रामकृष्ण मठ तो पहले ही बन चुका था, अब उन्होंने बड़े पैमाने पर एक संस्था बनाई और उसका नाम रखा-'रामकृष्ण मिशन'। इसकी शाखाएँ जगह-जगह खोली गईं। युवक-युवतियाँ सेवा का भाव लेकर इस संस्था से जुड़ने लगे। इस संस्था ने अस्पताल, स्कूल, कॉलेज एवं अनाथालय आदि खोले और केवल एक ही ध्येय रखा– जाति-पाँति की सीमाओं से परे मानव को ईश्वर का अंश जानकर उनकी सेवा करो। यही ईश्वर की सच्ची सेवा है। स्वामी विवेकानंद के कई विदेशी शिष्यों ने भी मानव-सेवा की इस योजना में भाग लिया। धीरामाता और मिस मूलर नामक उनकी शिष्याओं ने उन्हें बेलूर मठ बनवाने के लिए ज़मीन खरीदकर दी और गंगा नदी के किनारे भव्य बेलूर मठ बनाया गया। यहीं पर अब रामकृष्ण मिशन का प्रधान कार्यालय है। देश-विदेश में रामकृष्ण मिशन की अनेक शाखाएँ प्राणिमात्र की सेवा में आज भी लगी हुई हैं।

—भगतचंद्र मिश्र

7 पंच परमेश्वर

यदि सबको न्याय मिलता है तो सभी संतुष्ट व शांत हो जाते हैं।

अध्यापन संकेत

- पाठ के माध्यम से विद्यार्थियों को बताएँ कि न्याय की रक्षा के लिए हमेशा सहयोग करना चाहिए।

(कहानी)

• प्रेमचंद जी हिंदी साहित्य के महान लेखक हुए हैं। प्रस्तुत है उनके द्वारा लिखी गई एक सुप्रसिद्ध कहानी—

बहुत दिन पहले की बात है। एक गाँव में दो मित्र रहते थे– अलगू चौधरी और जुम्मन शेख। दोनों में गहरी मित्रता थी। अलगू चौधरी ने जुम्मन के पिता से ही शिक्षा प्राप्त की थी।

जुम्मन की एक बूढ़ी मौसी थी, उसके पास कुछ जमीन-जायदाद थी। जुम्मन ने बुढ़िया को समझा-बुझाकर वह जमीन अपने नाम करा ली। जब तक उस जमीन की लिखा-पढ़ी नहीं हुई, तब तक मौसी का बड़ा आदर-सत्कार होता था; किंतु जमीन पर अधिकार होते ही जुम्मन और उसकी पत्नी का व्यवहार अत्यंत रूखा हो गया। बुढ़िया को अकसर जली-कटी बातें सुनने को मिलती थीं।

अंत में बुढ़िया ने जुम्मन से कहा कि वह अलग रहेगी। वह उसे कुछ रुपया दे दिया करे। जुम्मन ने उल्टी-सीधी बातें कीं और रुपया देना स्वीकार नहीं किया। इस पर मौसी ने पंचायत बुलाकर फैसला कराने की धमकी दी।

जुम्मन का आस-पास के गाँवों में बड़ा दबदबा था। कोई उसके विरुद्ध नहीं बोल सकता था। इसलिए उसे पंचायत का कोई डर नहीं था। उसे विश्वास था कि पंचों का फैसला उसी के पक्ष में होगा। बुढ़िया मौसी ने आस-पास के गाँवों में जाकर अपना दुखड़ा सुनाया। लोगों ने उसके प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखाई। कुछ लोगों ने उसका उपहास भी किया।

अंत में बुढ़िया अलगू चौधरी के पास पहुँची और उससे पंचायत में आने को कहा। अलगू जुम्मन की मित्रता के कारण ना-नुकर करने लगा। बुढ़िया ने उससे ईमान की बात कहने का आग्रह किया।

एक दिन शाम को पंचायत बैठी। पंच लोगों के लिए जुम्मन ने पान, तंबाकू, हुक्के आदि का प्रबंध किया। जुम्मन के अनेक विरोधी भी पंचायत में आए थे। जब पंच लोग बैठे तो बूढ़ी मौसी ने अपनी समस्या सुनाई। उसने बताया कि उसने अपनी सारी जायदाद जुम्मन के नाम लिख दी थी और बदले में जुम्मन ने उसे आजीवन रोटी-कपड़ा देते रहने का वचन दिया था। पर अब उसे न पेट-भर रोटी मिलती है न कपड़ा। उसने पंचों से न्याय करने की विनती की।

जुम्मन के विरोधी रामधन मिश्र ने जुम्मन से पूछा कि वह किसे अपना पंच बनाना चाहता है। जुम्मन ने कहा कि खाला (मौसी) जिसे ठीक समझे, पंच बना ले। खाला ने जुम्मन के पक्के मित्र अलगू चौधरी को अपना पंच घोषित कर दिया

यह सुनकर जुम्मन मन ही मन बड़ा खुश हुआ। उसे विश्वास हो गया कि अब फैसला उसी के पक्ष में होगा। चौधरी ने कहा कि जुम्मन उसका गहरा मित्र है, इसलिए मौसी किसी और को पंच बना ले। मौसी ने कहा कि दोस्ती के पीछे कोई ईमान नहीं बेचता। पंच के हृदय में परमेश्वर का वास होता है। पंचों का निर्णय खुदा का फैसला होता है। अब अलगू चौधरी को सरपंच बनना पड़ा। सरपंच चुने जाने पर अलगू चौधरी ने कहा कि उसके लिए बूढ़ी खाला और जुम्मन बराबर हैं। वह न्याय की बात ही करेगा।

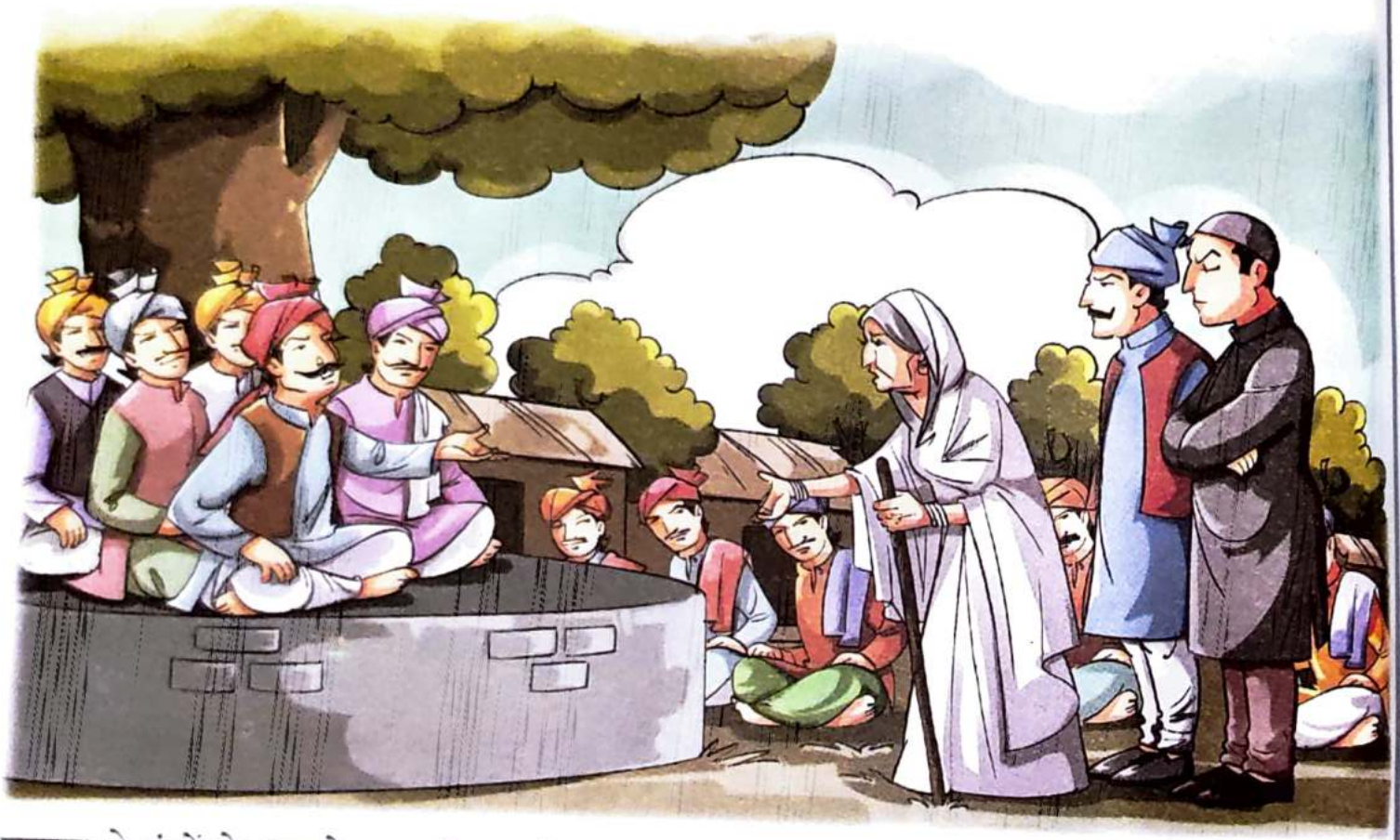

जुम्मन ने पंचों के सामने माना कि उसने खाला को मृत्युपर्यंत रोटी-कपड़ा देना स्वीकार किया था। वह खाला को माँ के समान मानता है। मगर वह खाला को हर महीने खर्च के रुपये नहीं दे सकता। उसने यह कहा कि लिखा-पढ़ी में भी खर्चे के बारे में कुछ नहीं कहा गया था।

जुम्मन की बात सुनकर अलगू चौधरी ने जुम्मन से तरह-तरह के प्रश्न किए। जुम्मन को अलगू के व्यवहार को देखकर आश्चर्य और क्रोध आ रहा था। अंत में अलगू चौधरी ने निर्णय सुनाया कि पंचों की राय में बुढ़िया को मासिक खर्च मिलना ही चाहिए।

जुम्मन यह फैसला सुनकर चकित रह गया। उसे अलगू पर बहुत क्रोध आ रहा था। इसके बाद दोनों की मित्रता दिखावटी रह गई। जुम्मन अलगू से बदला लेने का अवसर ढूँढ़ने लगा।

अलगू चौधरी के पास दो बड़े अच्छे बैल थे। संयोगवश पंचायत के एक महीने बाद उसका एक बैल मर गया। जुम्मन कहने लगा कि यह मित्र के साथ धोखा करने का फल है। अलगू चौधरी भी कहते फिरे कि बैल को जुम्मन ने विष दे दिया है। दोनों की पत्नियों में खूब झगड़ा हुआ। अलगू ने दूसरे बैल को बेचने का विचार किया।

उसी गाँव में समझू साहू नाम का एक व्यापारी रहता था। वह मंडी से सामान लाकर गाँव में बेचता था। उसने बैल खरीद लिया और एक महीने में मूल्य चुकाने का वचन दिया। समझू साहू बहुत लालची व्यक्ति था। उसने मंडी के चार-चार चक्कर लगाने आरंभ कर दिए। बैल के चारे-पानी पर भी वह ध्यान नहीं देता था। धीरे-धीरे बैल दुर्बल होता गया।

एक दिन उसने दुगना माल लादा और बैल पर चाबुक बरसाता चला। बैल बेचारा रास्ते में ही गिर गया और मर गया। इस पर साहू और उसकी पत्नी उल्टे अलगू को ही बुरा-भला कहने लगे। चौधरी जब भी पैसे माँगने जाता, वे उसे जली-कटी सुनाते और लड़ने को तैयार हो जाते। अंत में अलगू ने पंचायत बुलाई। अबकी बार साहू ने जुम्मन को अपना पंच बनाया। चौधरी घबराने लगा। वह समझ गया कि जुम्मन उससे बदला लेगा।

जुम्मन जब सरपंच के आसन पर बैठा तो उसे अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान हुआ। वह अलगू से अपने बैर-भाव को भूल गया। पंचों ने दोनों पक्षों की बातें सुनीं। अंत में जुम्मन ने फैसला सुनाया।

उसने कहा कि समझू को बैल का पूरा मूल्य चुकाना चाहिए। बेचे जाते समय बैल को कोई बीमारी नहीं थी। समझू की निर्दयता के कारण ही बैल की मृत्यु हुई है।

फैसला सुनकर अलगू बहुत प्रसन्न हुआ। उसने जोर से कहा, 'पंच परमेश्वर की जय!' सभी लोग पुकार उठे– 'पंच परमेश्वर की जय!' जुम्मन और अलगू एक-दूसरे के गले मिले और उनकी मित्रता फिर पहले जैसी हो गई।

सहानुभूति - हमदर्दी; जली-कटी बात - कड़वी बातें; दबदबा - दबाव; उत्तरदायित्व - जिम्मेदारी; उपहास - मजाक; ईमान - विश्वास; मृत्युपर्यंत - मरने तक; मित्रता - दोस्ती; दुर्बल - कमजोर; संयोगवश - दुर्भाग्य से; विरुद्ध - खिलाफ।

अभ्यास

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) जुम्मन की मौसी ने अपनी जमीन-जायदाद–
(i) दान में दे दी ( ) (ii) जुम्मन के नाम कर दी ( )

(ख) मौसी ने सरपंच बनाया–
(i) समझू साहू को ( ) (ii) अलगू चौधरी को ( )

(ग) समझू साहू ने खरीदा–
(i) जुम्मन के बैल ( ) (ii) अलगू का बैल ( )

(घ) जुम्मन और अलगू–
(i) शत्रु ही बने रहे ( ) (ii) फिर से मित्र बन गए ( )

2. सत्य कथनों के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ लगाओ–

(क) अलगू ने जुम्मन के पिता से शिक्षा प्राप्त की थी। ( )

(ख) बूढ़ी मौसी जुम्मन से प्रसन्न थी। ( )

(ग) जुम्मन सोचता था कि उसका मित्र उसी के पक्ष में फैसला देगा। ( )

(घ) बैल समझू साहू की निर्दयता के कारण मरा। ( )

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) जमीन पर अधिकार होते ही जुम्मन का व्यवहार कैसा हो गया?

.....

.....

(ख) मौसी को जुम्मन से क्या शिकायत थी?

.....

.....

(ग) मौसी ने अपना दुखड़ा किसे सुनाया?

.....

.....

(घ) जुम्मन ने सरपंच बनने पर किसके पक्ष में फैसला दिया?

.....

.....

भाषा की बात

1. **गहरे छपे शब्द का वचन बदलकर वाक्यों को पुनः लिखो–**

(क) **बैल** कमजोर हो गया था।

.....

(ख) **रोटी** गोल नहीं बनी थी।

.....

(ग) **पंच** ने फैसला सुनाया।

.....

(घ) लोग अपने-अपने **खेत** में चले गए।

.....

(ङ) मोर ने **नृत्य** किया।

.....

2. **समझकर लिखो–**

(क) देना – ……दिलवाना…… (ख) पीना – ……

(ग) पढ़ना – …… (घ) लिखना – ……

(ङ) फँसना – ……

3. **'उप' उपसर्ग जोड़कर लिखो–**

(क) ……उप…… + युक्त – ……उपयुक्त……

(ख) …… + हास – ……

(ग) …… + हार – ……

(घ) …… + योग – ……

(ङ) …… + निवेश – ……

4. **निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से मिलाओ–**

(क) मित्रता	(i) निरादर
(ख) शिक्षा	(ii) अस्वीकार
(ग) आदर	(iii) अशिक्षा
(घ) स्वीकार	(iv) अप्रसन्न
(ङ) प्रसन्न	(v) शत्रुता

5. **निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग करो–**

(क) सहानुभूति – ……

……

(ख) उत्तरदायित्व – ……

……

(ग) संयोगवश – ……

……

(घ) दुर्बल – ……

……

(ङ) उपहास – ……

……

- प्रेमचंद जी की ये कहानियाँ भी ढूँढ़कर पढ़ो–

ठाकुर का कुआँ

गुल्ली डंडा

बड़े भाईसाहब

दो बैलों की कथा

नमक का दरोगा

- प्रेमचंद जी की जीवनी संक्षेप में सुनाओ। (पुस्तकालय से ढूँढ़कर पढ़ो)
- आप भी खेल-खेल में पंचायत करके किसी मामले को सुलझाओ और अपना निर्णय दो।

जैसे-यदि किसी ने किसी के बाग से फूल तोड़े या फल चुराए हो तो .....।

.....

.....

.....

.....

यदि किसी का सामान चोरी हुआ हो तो .....

.....

.....

.....

यदि कोई किसी के साथ गलत व्यवहार या मारपीट या अपशब्द कहे तो .....

.....

.....

.....

.....

8 प्यारी दादी को पत्र

हमारे दादा-दादी हमारे लिए बहुत से कार्य करते हैं।

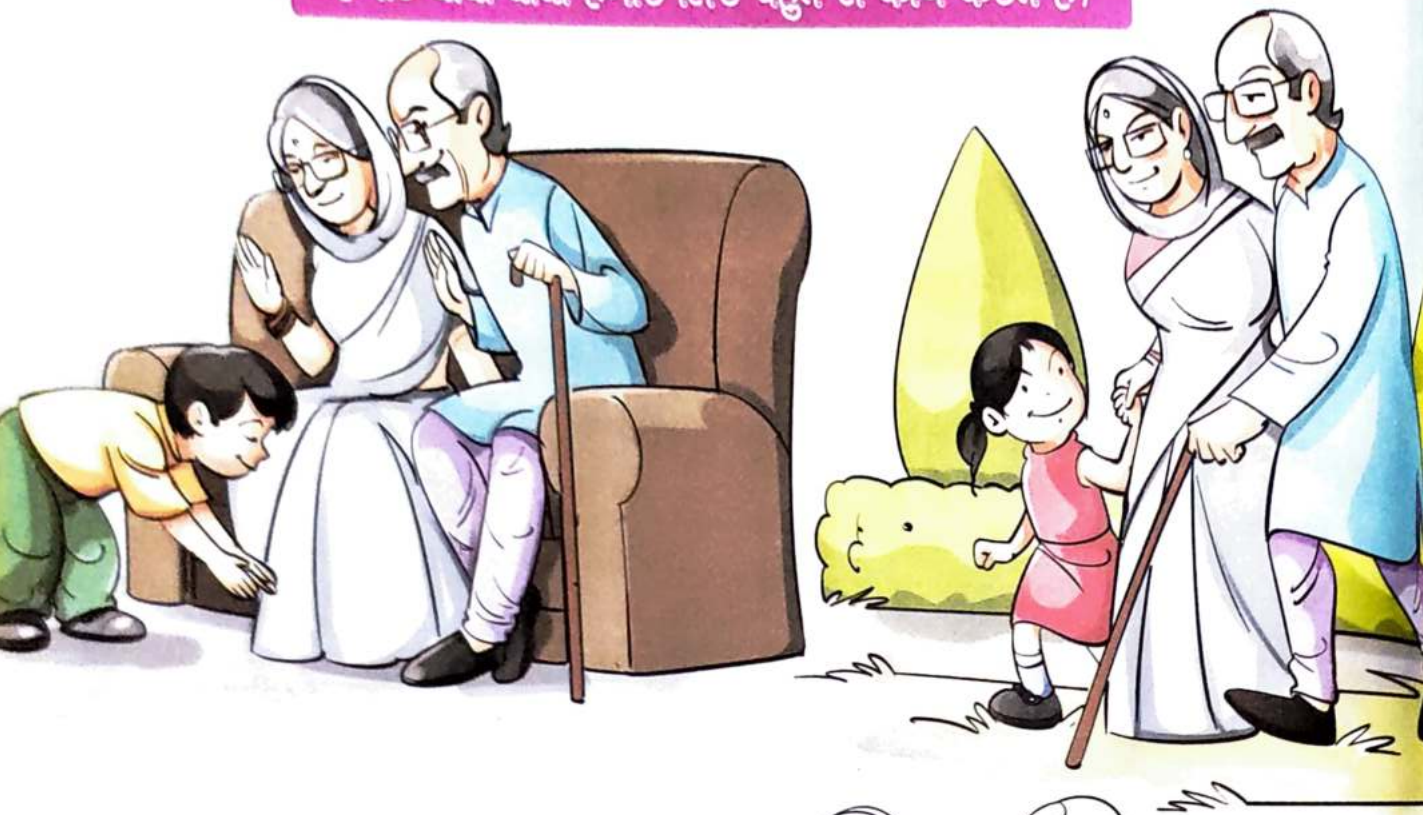

अध्यापन संकेत

- अध्यापक बच्चों को अपने दादा-दादी तथा माता-पिता का सम्मान करने के लिए कहें।

(पत्र)

अपने प्रियजनों से दूर रहकर उनकी याद आना स्वाभाविक है। ऐसे में उनके प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त करने का पत्र एक अच्छा माध्यम है। आओ पढ़ें पाखी का यह पत्र—

प्रिय दादी जी

सादर नमस्ते

आप कैसी हैं? जब से हम आपके पास से तबादला होने के कारण इस शहर में आए हैं, मुझे आपकी बहुत याद आती है। आपके साथ मुझे बहुत अच्छा लगता था।

आपके साथ मंदिर जाना, सब्जी खरीदने जाना, रिश्तेदारों के घर जाकर मिलना-जुलना सभी कुछ बार-बार याद आता है।

सर्दियों की रातों में आप गुदगुदी शनील की प्यारी सी रजाई उढ़ाकर जब थपकियाँ देती थीं तो कितनी अच्छी नींद आती थी! छुट्टी वाले दिन तो मानो दीवाली ही हो जाती थी।

आपकी रसोई में कितनी स्वादिष्ट वस्तुएँ बनती थीं! यूँ तो माँ भी बहुत सी अच्छी चीजें बनाती हैं पर आपके बिना मैं बड़ी उदास हूँ इसलिए वे चीजें अच्छी नहीं लगती। आप कितना धीमे बोलती थीं और सारा-सारा दिन काम में जुटी रहतीं। सोचती हूँ तो दिल भर आता है। वैसे यहाँ सब कुछ ठीक है, विद्यालय में नई-नई सहेलियाँ भी बन गई हैं। कुछ तो बहुत बातूनी है। पिताजी शहर बदलने के कारण काफी परेशान से हैं, अक्सर माँ से अपनी उलझनों की बातें करते हैं। मैं तो डर ही जाती हूँ क्योंकि आपके पास रहते तो कभी कोई चिंता नहीं थी, बस मजे ही मजे थे, खुशियाँ ही खुशियाँ थीं। काश हम सब फिर से आपके पास ही आ जाएँ।

आप अपना ध्यान रखना और कुछ आराम भी करना। थोड़ी देर धूप भी सेंकना। काम-काज के लिए अपनी सेहत को अनदेखा मत कर देना। घर में सबको नमस्ते देना।

आपकी प्राची

.....

तबादला - नौकरी के कारण होने वाला स्थान परिवर्तन; स्वादिष्ट - मज़ेदार; शनील - एक मुलायम व खूबसूरत कपड़ा; अनदेखा - ध्यान न देना; उलझन - कठिनाई।

अभ्यास

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) यह पत्र लिखा गया है–

(i) दादी के लिए ( ) (ii) नानी के लिए ( )

(ख) बच्ची का शहर बदल गया–

(i) पढ़ाई के लिए ( ) (ii) पिताजी के तबादले के कारण ( )

(ग) दादी जी बच्ची को सुलाती थी–

(i) शनील की रजाई में ( ) (ii) कंबल में ( )

(घ) बच्ची जाना चाहती है–

(i) घूमने ( ) (ii) वापस दादी के घर ( )

2. रिक्त स्थान में उचित शब्द भरो–

(क) प्राची को दादी के साथ ..... जाना अच्छा लगता था। (मंदिर/फिल्म देखने)

(ख) तबादले के बाद से प्राची के पिताजी ..... रहने लगे थे। (परेशान/खुश)

(ग) पिताजी माँ से अपनी ..... की बातें किया करते थे। (बचपन/उलझनों)

(घ) प्राची ने दादी जी को ..... की सलाह दी। (हवा खाने/धूप सेंकने)

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–**

(क) प्राची को दादी के साथ मिलकर क्या-क्या करना अच्छा लगता था?

.....

.....

(ख) दादी जी कैसे बोलती थी?

.....

.....

(ग) प्राची को कब अच्छी नींद आती थी?

.....

.....

(घ) प्राची को माँ की बनाई स्वादिष्ट चीजें भी क्यों अच्छी नहीं लगती?

.....

.....

भाषा की बात

1. **बहुवचन लिखो–**

(क) खुशी – .....

(ख) वस्तु – .....

(ग) रजाई – .....

(घ) कहानी – .....

(ङ) सहेली – .....

(च) निशानी – .....

2. **दिए गए वाक्य के काल बताओ–**

(क) मैं पत्र लिखूँगी। .....

(ख) श्याम आ रहा है। .....

(ग) हवा चल रही थी। .....

(घ) तुम कब आओगे? .....

(ङ) हमें चेन्नई जाना है। .....

3. पढ़ो और समझो–

(क) अच्छा, बढ़िया, श्रेष्ठ।

(ख) सुंदर, रमणीक, मनोहर।

(ग) उदास, दुखी, खिन्न।

(घ) स्वादिष्ट, मज़ेदार, रुचिकर।

कुछ करने के लिए

- आप भी अपने किसी प्रियजन जैसे नाना-नानी, मौसा-मौसी, चाचा-चाची या भाई-बहन अथवा मित्र को एक पत्र लिखो

.....

.....

- .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- पत्र लिखने-पढ़ने का प्रचलन क्यों कम हो गया है? इसके कारण बताओ।
- जब आपको किसी का पत्र मिलता है, तो आपको कैसा लगता है? अपना अनुभव लिखो।

9 आँधी से टकराएँ हम

जीवन की चुनौती का सामना प्रत्येक को करना ही पड़ता है, भले ही वह चाहे या न चाहे।

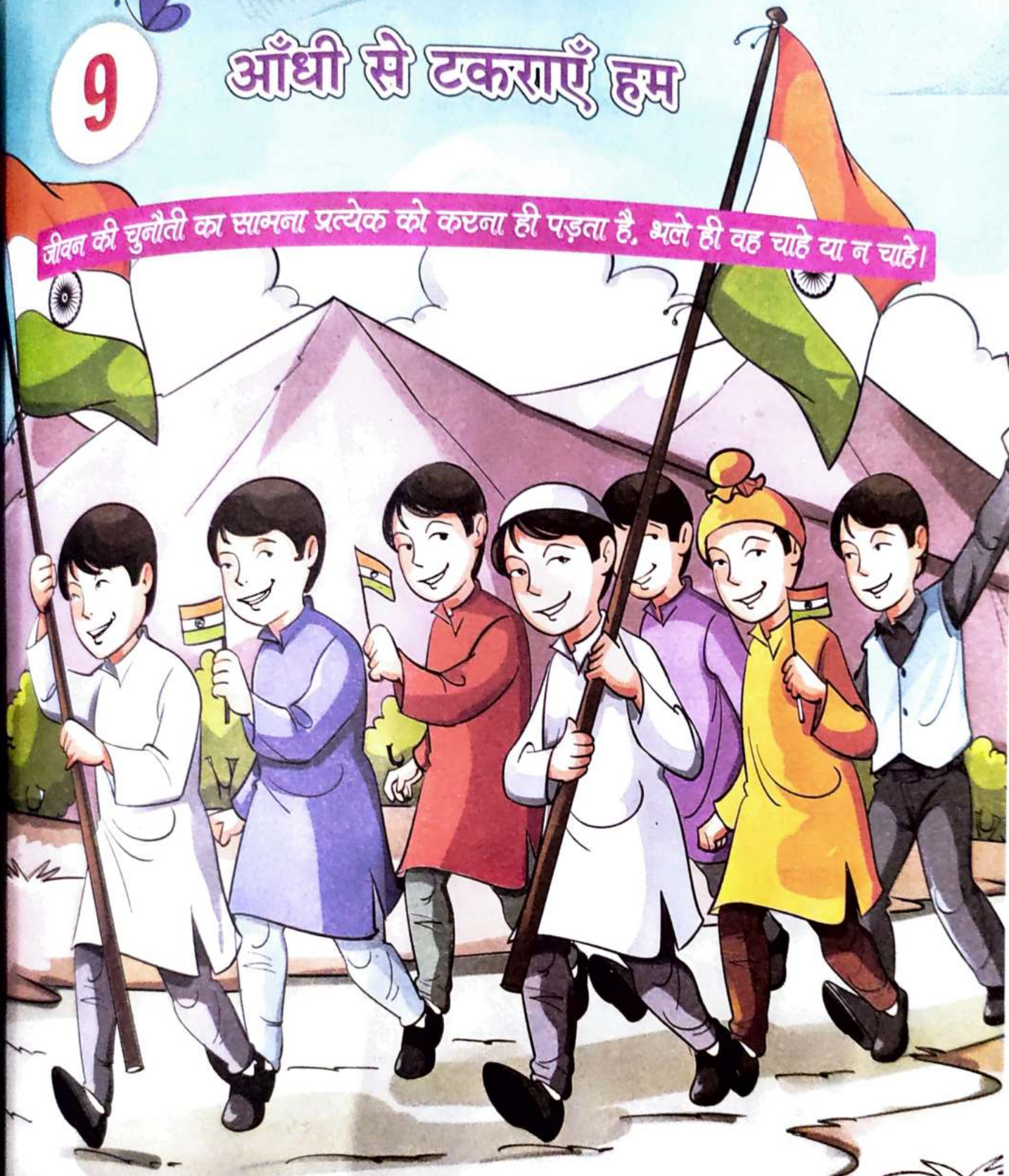

अध्यापन संकेत

- कविता के माध्यम से जीवन में आने वाली कठिनाइयों का डटकर सामना करने की प्रेरणा दें।

(कविता)

- जीवन का संघर्ष हमें हर पल चुनौती देता है और हमें अनेक संकटों से जूझना ही पड़ता है। इस कविता में यही कामना की गई है कि हमें संकटों का सामना करने की शक्ति मिले—

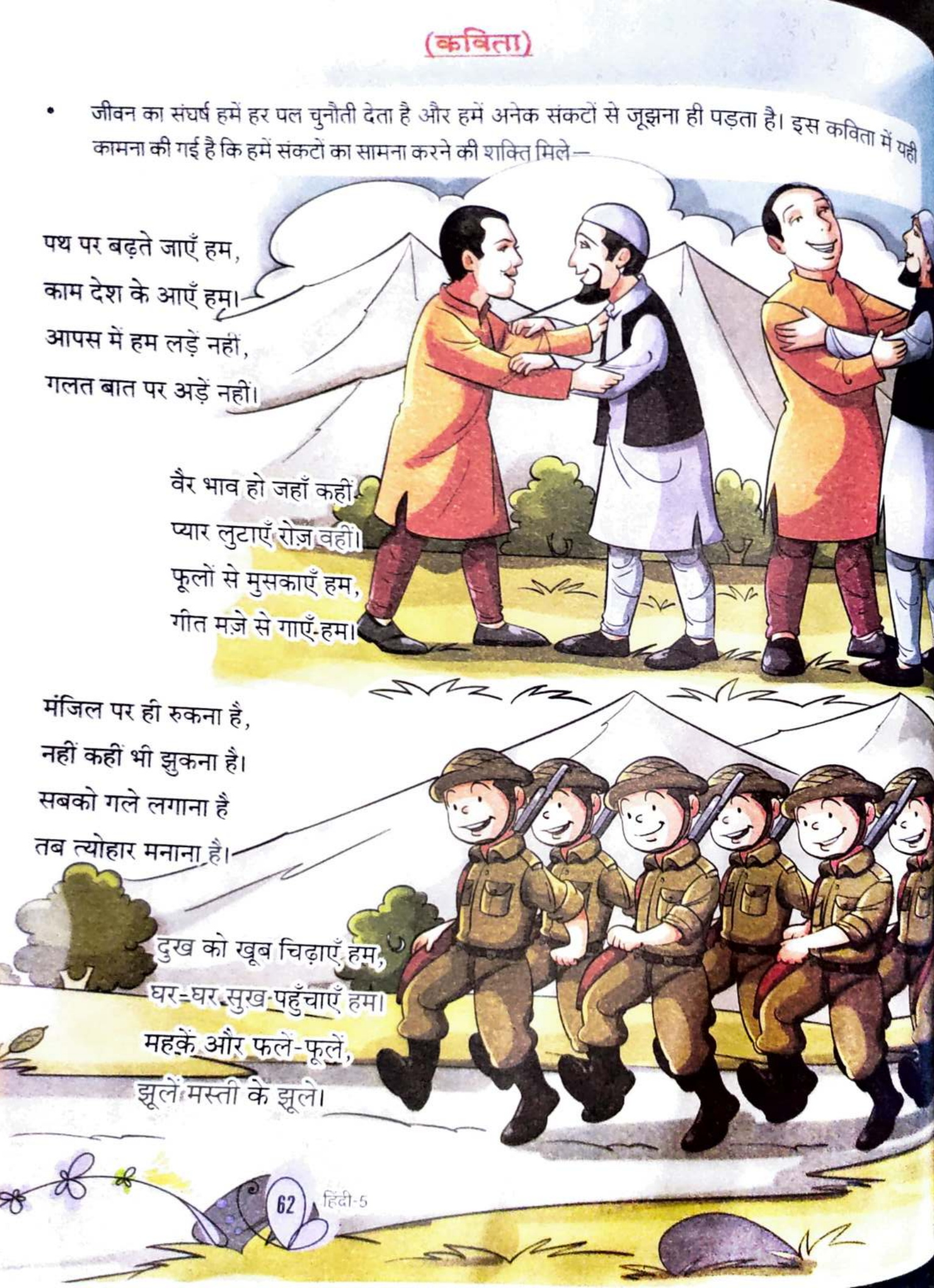

पथ पर बढ़ते जाएँ हम,
काम देश के आएँ हम।
आपस में हम लड़ें नहीं,
गलत बात पर अड़ें नहीं।

वैर भाव हो जहाँ कहीं
प्यार लुटाएँ रोज़ वहीं।
फूलों से मुसकाएँ हम,
गीत मज़े से गाएँ-हम।

मंजिल पर ही रुकना है,
नहीं कहीं भी झुकना है।
सबको गले लगाना है
तब त्योहार मनाना है।

दुख को खूब चिढ़ाएँ हम,
घर-घर सुख पहुँचाएँ हम।
महकें और फलें-फूलें,
झूलें मस्ती के झूले।

(ख) मंजिल पर ही .....

..... झुकना है।

..... लगाना है;

तब त्योहार .....।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) हमें किस बात पर नहीं अड़ना है?

.....

.....

(ख) घर-घर क्या पहुँचाने की बात कविता में कही गई है?

.....

.....

(ग) जहाँ वैर भाव हो, वहाँ हमें क्या करना होगा?

.....

.....

(घ) यहाँ कौन से झूले झूलने की बात कही गई है?

.....

.....

भाषा की बात

1. तुक मिलाओ–

(क) चिढ़ाएँ – .....

(ख) मिलाएँ – .....

(ग) फूलें – .....

(घ) रुकना – .....

(ङ) संतान – .....

(च) लगाना – .....

2. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं।

निम्नलिखित में से संज्ञा शब्द छाँटकर लिखो–

(क) बच्चे में उत्साह है। .....

(ख) हमें देश का नाम चमकाना है। .....

(ग) भारत एक महान देश है। .....

(घ) मेले में खूब रौनक थी। .....

3. **'ता' प्रत्यय जोड़कर लिखो–**

(क) दृढ़ – .....दृढ़ता..... (ख) भौतिक – .....

(ग) सम – ..... (घ) अनेक – .....

(ङ) मम – ..... (च) तत्पर – .....

(छ) विषम – ..... (ज) विभिन्न – .....

4. **निम्नलिखित वाक्यों को सही करके लिखो–**

(क) हमें आपस में लड़ना चाहिए।

.....

(ख) हमें मंजिल से पहले रूक जाना चाहिए।

.....

(ग) हम घर-घर दुख पहुँचाना चाहिए।

.....

(घ) हमें फूलों की तरह मुरझाना चाहिए।

.....

(ङ) हमें आँधी से टकराना नहीं चाहिए।

.....

5. **निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग करो–**

(क) पथ – .....

.....

(ख) वैर – .....

.....

(ग) आनंद – .....

.....

(घ) मंजिल – .....

.....

(ङ) संतान – .....

.....

कुछ करने के लिए

- उत्साह उत्पन्न करने वाली किसी अन्य कविता की आठ-दस पंक्तियाँ लिखो–

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- जब आपके सामने कोई संकट या बाधा आती है तो आप क्या करते हैं? दिए गए विकल्पों में से सही के सामने ✓ लगाओ–

(क) घबरा जाते हैं ( )

(ख) जोश से भर जाते हैं ( )

(ग) होश खो बैठते हैं ( )

(घ) सबसे सलाह माँगते हैं ( )

(ङ) विश्वास से उसका सामना करते हैं ( )

- 'जीवन एक चुनौती है' इस विषय पर एक परिचर्चा (गोष्ठी) करो।

शमादान

(विदेशी कहानी) **पठन हेतु**

मायरिल एक दयालु पादरी थे। वे अपनी बहन मैग्लोरी के साथ रहते थे। एक दिन उनके पास एक अजनबी आया। उसने अपनी पीठ पर एक थैला लटका रखा था। वास्तव में वह एक अभियुक्त था जो एक चोरी के सिलसिले में कठोर सजा काट चुका था।

अजनबी ने अपना परिचय दिया, "मैं जीन वेलज़ीन हूँ। सजा काटने के बाद जेल से छूटा तो सोचा कि कोई काम करूँ। मैं कई दिनों से भटक रहा हूँ पर कोई काम नहीं मिला। क्या, आप एक रात मुझे यहाँ काटने देंगे?"

मायरिल ने आगंतुक को अंदर लाकर बैठाया। उन्होंने मैग्लोरी से कहा, "बहन, अतिथि का कमरा साफ करवाओ और खाना जरा जल्दी लगवा दो। इन्हें भूख लगी होगी।"

मैग्लोरी अंदर चली गई और जल्दी से खाना लगाया। मायरिल जीन वेलज़ीन को साथ लेकर खाने की मेज पर पहुँचे। जीन वेलज़ीन ने पेटभर खाना खाया। भोजन के पश्चात् मायरिल ने चाँदी की नक्काशी वाला शमादान उठाया और वे जीन को अतिथि वाले कमरे तक ले गए। शमादान वहीं रखकर वे लौट गए। वह एक कीमती शमादान था जो राजा ने उन्हें उपहार में दिया था।

जीन सुबह-सुबह ही सोकर उठा। उसने देखा कि मायरिल और मैग्लोरी अभी सो रहे थे। उसने अलमारी खोली। अलमारी चाँदी के चमचमाते पात्रों से भरी पड़ी थी। जीन ने सारे पात्र निकालकर अपने थैले में भरे और दबे पाँव बाहर निकल गया। थोड़ी देर में मायरिल उठे और बाहर जाकर टहलने लगे। इतने में मैग्लोरी भागती हुई आई, "अरे! वह तो हमारे सारे बर्तन ले गया।"

"कोई बात नहीं। वह बेचारा बहुत गरीब था, शायद उसका कुछ भला हो जाए!"

मायरिल ने ऐसे कहा मानो यह कोई अनहोनी घटना न हो।

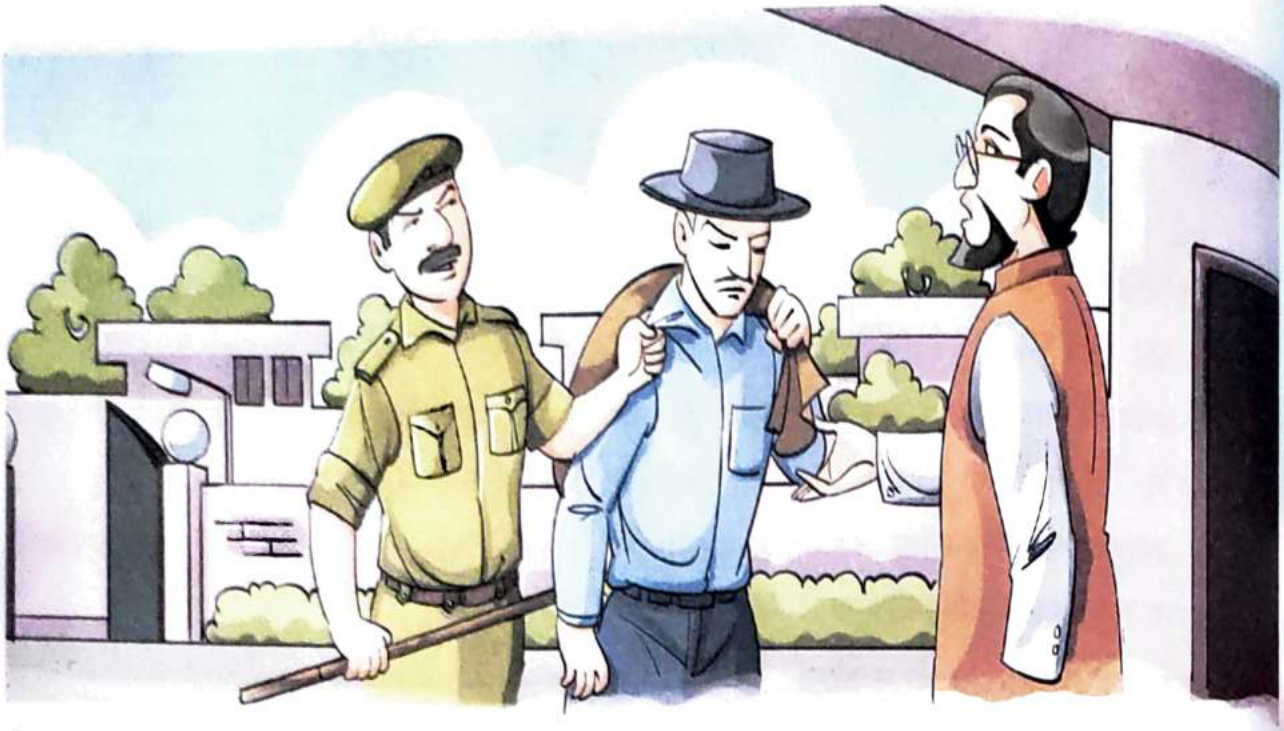

मैग्लोरी वापस अंदर चली गई और नाश्ता तैयार करने लगी। अभी दोनों नाश्ता कर ही रहे थे कि किसी ने दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खोला तो देखा कि एक पुलिसवाला जीन को पकड़े हुए था। मायरिल सब समझ गए कि मामला क्या है। अनजान बनते हुए बोल पड़े, "अरे, जीन वेलज़ीन, तुम सारे पात्र तो लेकर गए पर यह शमादान क्यों छोड़ गए? तुम्हें इसकी भारी कीमत मिलती और पैसा तुम्हारे काम आता।"

"तो यह सच कह रहा था," पुलिसवाला बोला, "इसके पास आपके बर्तन देखकर मैंने सोचा कि इसने फिर चोरी शुरू कर दी है।"

'नहीं, नहीं! ये सारे पात्र मैंने ही उसे दिए हैं, नई जिंदगी शुरू करने के लिए।" यह कहते हुए पादरी ने शमादान उठाया और जीन को देते हुए कहा, "यह भी ले जाओ, भाई! पर याद रखना, तुमने नेक काम शुरू करने का वायदा किया है।"

जीन ने चुपचाप शमादान लिया, अपना थैला उठाया और अश्रुभरे नेत्रों से बाहर चला गया।

—विक्टर ह्यूगो

10 विश्वास

विश्वास सबको साहस व बल देता है।

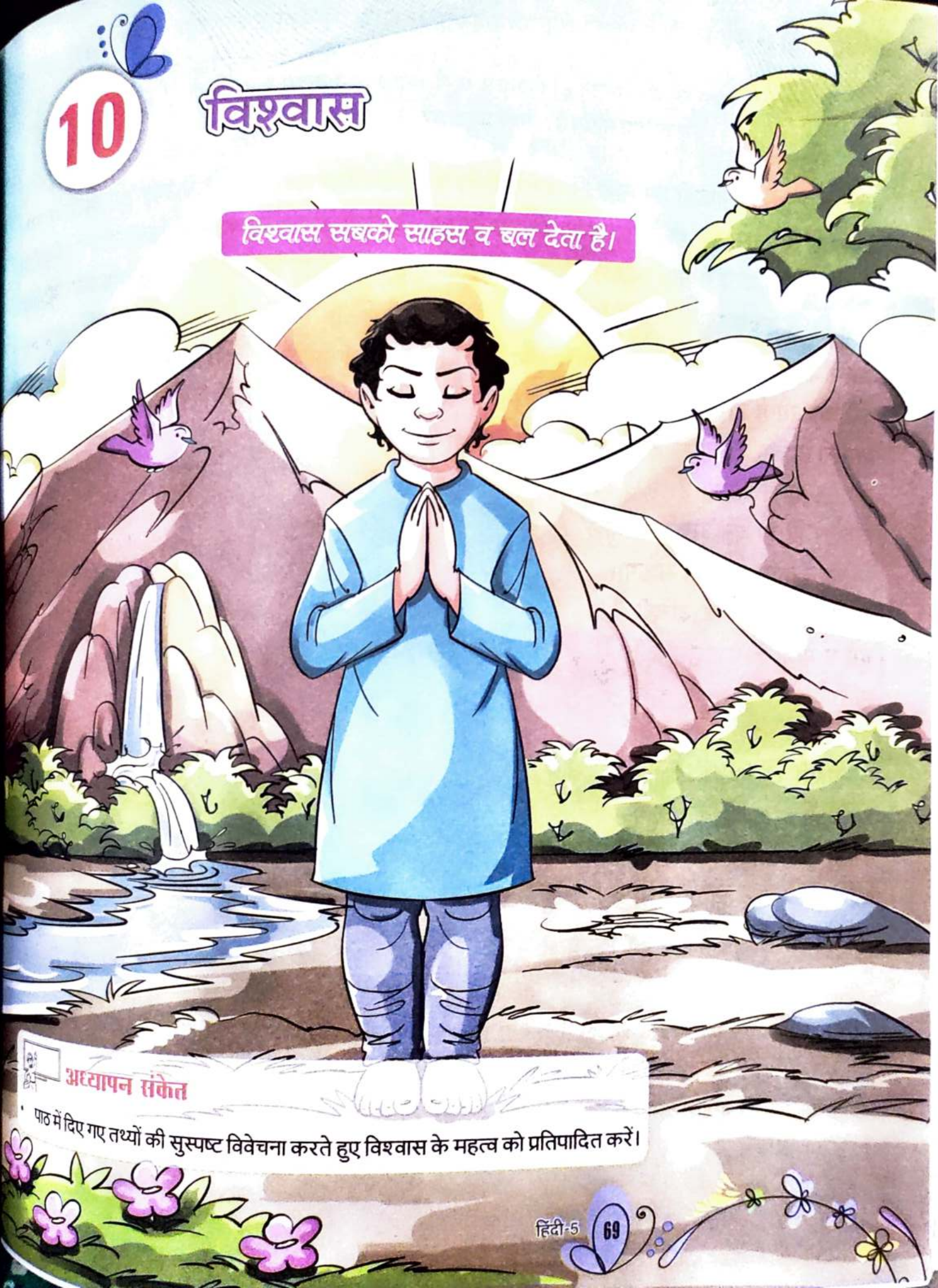

अध्यापन संकेत

- पाठ में दिए गए तथ्यों की सुस्पष्ट विवेचना करते हुए विश्वास के महत्व को प्रतिपादित करें।

(निबंध)

- जीवन में विश्वास का बड़ा महत्व है। विश्वास से ही मनुष्य आगे कदम बढ़ा सकता है। इस निबंध में लेखक ने विश्वास क्या है? इसका क्या महत्व है? आदि प्रश्नों पर विचार किया है—

'मैं यह हूँ' की जानकारी का नाम ही विश्वास है। मन को स्वस्थ बनाए रखने में विश्वास अकसीर माना जाता है। विश्वासहीन ही नास्तिक नाम पाता है। कोई आदमी अपने को पहचाने बिना अपनी जिंदगी से पूरा लाभ नहीं उठा सकता और न वह उस फर्ज को पूरा कर सकता है, जिसे पूरा करने के लिए वह पैदा हुआ है।

आत्मविश्वास बनाए रखने के लिए मनुष्य न जाने क्या-क्या करता है, और उसे करना भी चाहिए। यह बुरी बात तो है ही नहीं, जरूरी है। अगर किसी आदमी को अपने बारे में यह भी पता चले कि वह एक मामूली आत्मा है, तो भी उसके लिए ऊँचे विचारों में लीन रहना जरूरी है। ऊँचे विचारों के बल पर ही तो वह अपने 'न कुछ' से 'बहुत कुछ' काम ले सकेगा। पत्थर में जिस तरह अच्छी, बुरी व मामूली तीनों तरह की मूर्तियाँ मौजूद रहती हैं, और वह अच्छे, बुरे व मामूली कलाकारों के हाथों में जाहिर होती है; ठीक उसी तरह हर आत्मा में अच्छे, बुरे व मामूली काम करने की काबिलियत रहती है। पर वह अच्छे बुरे व मामूली विश्वास में ही काम आती है। जिससे जो कुछ हो जाता है, उसको आत्मा ठीक बताकर अपनी तसल्ली करता है। उसकी जाँचने की कसौटी परिस्थितियों पर निर्भर करती है। इसलिए इस बात पर जोर दिया जाता है कि विचार हमेशा ऊँचे रखने चाहिए। ऊँचे विचारों से परिस्थितियों का असर अगर बिल्कुल नष्ट नहीं होता तो कम तो हो ही जाता है।

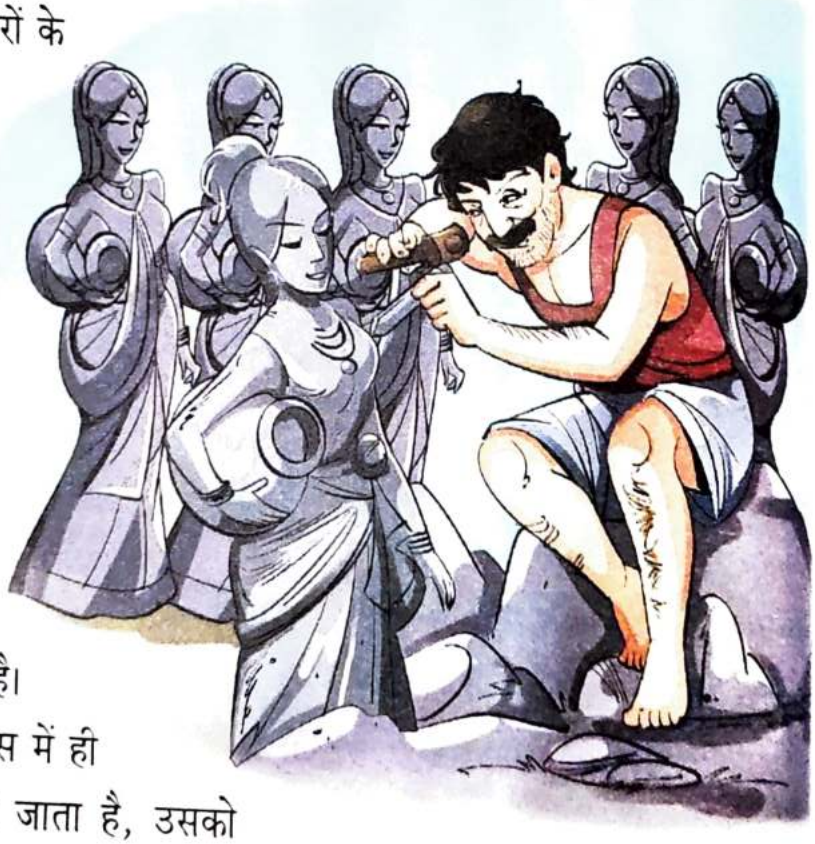

इच्छाएँ सबमें होती हैं और सब उनको पूरा भी करना चाहते हैं। ऊँचे विचार वाले और नीचे विचार वालों में एक ही इच्छा के पूरा करने में अंतर रहेगा। मान लो, दोनों में लड्डू खाने की इच्छा पैदा हुई। यह भी मान लो कि दोनों के पास पैसा नहीं है। ऐसी हालत में नीचे विचार वाला चोरी करके अपनी इच्छा पूरी करेगा और दूसरा मजदूरी करके। मैं कौन हूँ यह जानने की इच्छा भी इच्छा है और इसके जवाब भी अलग-अलग कई हो सकते हैं। हर जवाब में जवाब देने वाले के सारे दर्शन का निचोड़ रहेगा। वह जवाब ही विश्वास बनकर आगे की राह दिखाने में काम आएगा। आदमी के अल्लाह की शक्ल वाला बना होने में इतनी-सी सच्चाई है, जितनी कि खाक का पुतला होने में। आदमी पंचमूल का भी है और अजर-अमर आत्मा का भी। वह क्या नहीं है? परमात्मा भी और आत्मा भी। हम कहाँ तक ऊँचे जा सकते हैं यह अभी तय नहीं हो पाया। आजकल ऊँचे जाने की हद नहीं। सच्चा, फिर क्यों न विचार ऊँचे रखे और क्यों न अपनी इच्छाओं को उसी के मुताबिक पूरा करें।

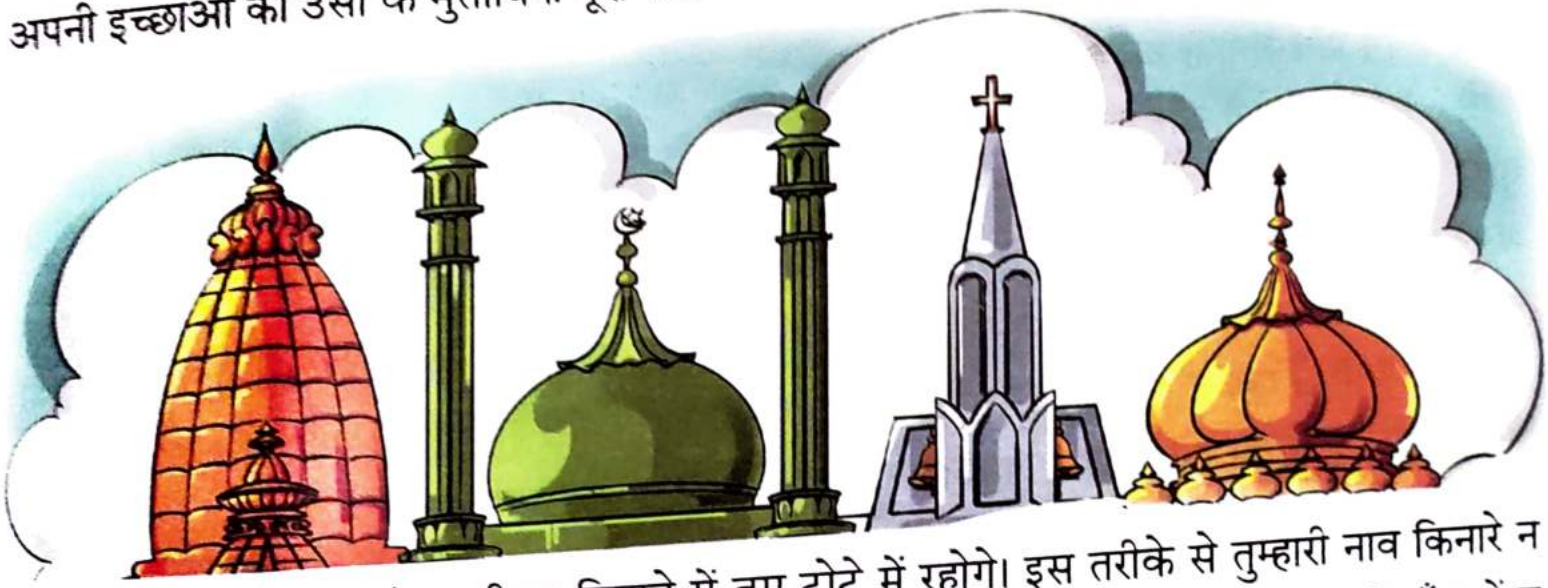

अपने को तुच्छ मानकर ऊँचा जीवन बिताने में तुम टोटे में रहोगे। इस तरीके से तुम्हारी नाव किनारे न लग पाएगी, बीच में ही डगमगाकर भँवर में जा फँसेगी। धर्म या धर्मों में चाहे कितनी ही कमियाँ क्यों न हों, एक जबरदस्त गुण भी है, और वह अकेला ही कमियों की ओर किसी की नजर नहीं जाने देता। वह गुण है– आदमी अजर-अमर आत्मा है, मिट्टी का पुतला नहीं, मनुष्य खुदा का अंश है, हड्डी-चमड़े की मशीन नहीं है। यह नहीं कि कुछ चीज मिलकर जिस्म बन गया और फिर उसमें मन का कल्ला फूट आया और फिर पूरा साहस आने पर वह आदमी कहलाने लगा। धर्म आदमी की जड़ अनादि-अनंत में जमा देता है और उसे सदा के लिए सुरक्षित कर देता है। धर्म आदमी के परमात्मा होने का विश्वास करा देता है। सब बड़े-बड़े धर्मों के 'मैं क्या हूँ?' के जवाब सुनकर तबीयत फड़क उठती है। तभी तो बचपन से विज्ञान में लगे आदमी बड़ी जल्दी धर्म को स्वीकार करते हैं। मेरी राय में सब धर्मों का निचोड़ यही है कि विश्वास से आदमी बदला जा सकता है।

हम वही हैं जो अपने को माने हुए हैं। अवतार हमारी मान्यता को बदलकर हमें कुछ-का-कुछ बना देते हैं जो विश्वास अवतार हम में पैदा करते हैं क्या वह हम अपने-आप में पैदा नहीं कर सकते? क्यों नहीं कर सकते? जरूर कर सकते हैं। कैसे? दो तरीकों से– विवेक से और त्याग से। विश्वास के दो पहलू होने से ये दोनों एक ही हैं। जीवन के तूफान में जगमगाता आदमी अगर अपने पाँव जमाना चाहता है तो आँखें खुली रखे और उन्हीं गुणों को अपनाए जो आदमी के अपनाए जाने लायक हैं। उन्हीं उद्‌देश्यों की ओर दौड़े जिन पर पहुँचकर उसकी आत्मा खुशी और भोजन पाएगी। आदमी को संपूर्ण बनने के लिए विवेक के दिए को लेकर भले-बुरे गुणों की तमीज करनी ही होगी। उनमें से एक को पकड़कर बैठना ही होगा पकड़ते ही त्याग शुरू हो जाएगा। सच को अपनाकर झूठ छोड़ना ही होगा। ऊँचा डंडा पकड़ने पर नीचे का छूट ही जाएगा। चढ़ने का तरीका यही है। हाँ दूसरा पहलू नहीं है।

विवेक और त्याग न अपने आप कभी पैदा हुए, न होते हैं, न होंगे। ये खासियतें अलग कहीं मिलती हों नहीं। वे तो विश्वास के पाने वाले की शक्ल में ही मिलती है। किसी में विश्वास किए बिना वे दोनों तुम्हारे हाथ न लगेंगी। विश्वास के बिना तुम ऐसे गिरोगे कि हजारों घोड़ों की ताकत वाला लोहे का घोड़ा भी तुम्हें नहीं उठा सकेगा।

मरते आए हो, मर रहे हो, मरते रहोगे– यह सिलसिला तो न रुकेगा। हाँ, कुत्तों की मौत मरना रुक सकता है, और वह भी विश्वास से।

मानना शुरू कर दो, कि तुम आजाद हो, जो और कर सकते हैं, वह तुम भी कर सकते हो, और उससे ज्यादा भी कर सकते हो।

—महात्मा भगवानदीन

शब्द-अर्थ विश्वास - यकीन, आस्था; कसौटी- परख करने का यंत्र; पंचभूत - पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश; तुच्छ - घटिया; आत्माभिमान - स्वाभिमान, मैं आत्मा हूँ यह बोध; दर्शन - मूल्य व धारणाएँ; मुताबिक - अनुसार।

अभ्यास

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) इच्छाएँ होती हैं–

(i) किसी-किसी में ( ) (ii) सभी में ( )

(ख) धर्म आदमी की जड़ जमा देता है–

(i) आदि-अनंत में ( ) (ii) इस संसार में ( )

(ग) आदमी को संपूर्ण बनने के लिए दिया हाथ में लेना होगा–

(i) तेल से भरा ( ) (ii) विवेक का ( )

(घ) धर्म आदमी को विश्वास दिला देता है कि वह–

(i) स्वयं परमात्मा रूप है ( ) (ii) मिट्टी का पुतला ( )

2. सत्य कथनों के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ लगाओ–

(क) इस पाठ के लेखक महात्मा भगवानदीन है। ( )

(ख) विश्वास का कोई महत्व नहीं है। ( )

(ग) हमें सच को अपनाकर झूठ छोड़ना ही होगा। ( )

(घ) विवेक और त्याग विश्वास से पैदा होते हैं। ( )

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) अपने को न पहचानने पर क्या हानि होती है? ....

....

....

(ख) हमें कैसे विचार रखने चाहिए?

.....

.....

(ग) धर्म में कौन सा एक जबरदस्त गुण है?

.....

.....

(घ) कौन से व्यक्ति धर्म को बड़ी जल्दी स्वीकार कर लेते हैं?

.....

.....

भाषा की बात

1. शब्दों का वर्ण विच्छेद करो–

(क) अनादि – .....अ + न् + आ + द् + इ.....

(ख) निचोड़ – .....

(ग) इच्छा – .....

(घ) विचार – .....

(ङ) गुण – .....

2. सुमेल करो–

(अ)	**(ब)**
(क) लीन	(i) साधारण
(ख) तसल्ली	(ii) स्थिति
(ग) हालत	(iii) विधि
(घ) मामूली	(iv) मगन
(ङ) तरीका	(v) आश्वासन

3. पढ़ो, समझो और लिखो–

(क) मन-मुताबिक – .....मन के मुताबिक.....

(ख) अच्छा-बुरा – .....

(ग) रात-दिन – .....

(घ) साँझ-सवेरे – .....

(ङ) संग-साथ – .....

4. **निम्नलिखित वाक्यों को सही करके लिखो–**

(क) रखने ऊँचे विचार चाहिए हमेशा

.....

(ख) बदला विश्वास सकता जा आदमी से है

.....

(ग) आत्मा अमर है आदमी अजर

.....

(घ) नास्तिक है नाम विश्वासहीन पाता ही

.....

(ङ) इच्छाओं पूरा सब चाहते करना हैं को

.....

5. **निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

(क) विश्वास – .....

.....

(ख) तुच्छ – .....

.....

(ग) कसौटी – .....

.....

(घ) नास्तिक – .....

.....

(ङ) मान्यता – .....

.....

कुछ करने के लिए

- आपका विश्वास किन-किन में है? चुनकर बताओ—

स्वयं में	( )
ईश्वर में	( )
धर्म में	( )
कानून में	( )
अध्यापकों में	( )
परिवार में	( )

- विश्वास को तोड़ने वाला विश्वासघाती कहलाता है। क्या आपके किसी साथी ने कभी आपका विश्वास तोड़ा है, यदि हाँ, तो उस विषय में बताओ।
- 'हम होंगे कामयाब............. ....' यह एक प्रसिद्ध गीत है। इसे ढूँढ़कर लिखो—

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

11 खूनी हस्ताक्षर

वीरता का सम्मान सदा से होता आया है और सदा ही होता रहेगा।

अध्यापन संकेत

- विद्यार्थियों के साथ चर्चा करें कि किस प्रकार स्वाधीनता के लिए असंख्य वीरों ने जीवन न्योछावर किए हैं। हमें भी देश की रक्षा हेतु सदैव सजग रहना चाहिए।

(कविता)

- दासता की बेड़ियाँ तोड़ना बहुत कठिन होता है किंतु आज़ादी के मतवाले जब कुछ ठान लेते हैं तब उसे पूरा करके ही दम लेते हैं। यहाँ वीर सुभाष चंद्र बोस की जीवन गाथा के अंश दिए गए हैं—

उस दिन लोगों ने सही-सही
खूँ की कीमत पहचानी थी,
जिस दिन सुभाष ने बर्मा में,
माँगी उनसे कुरबानी थी।

बोले– "स्वतंत्रता की खातिर,
बलिदान तुम्हें करना होगा।
तुम बहुत जी चुके हो जग में,
लेकिन आगे मरना होगा।

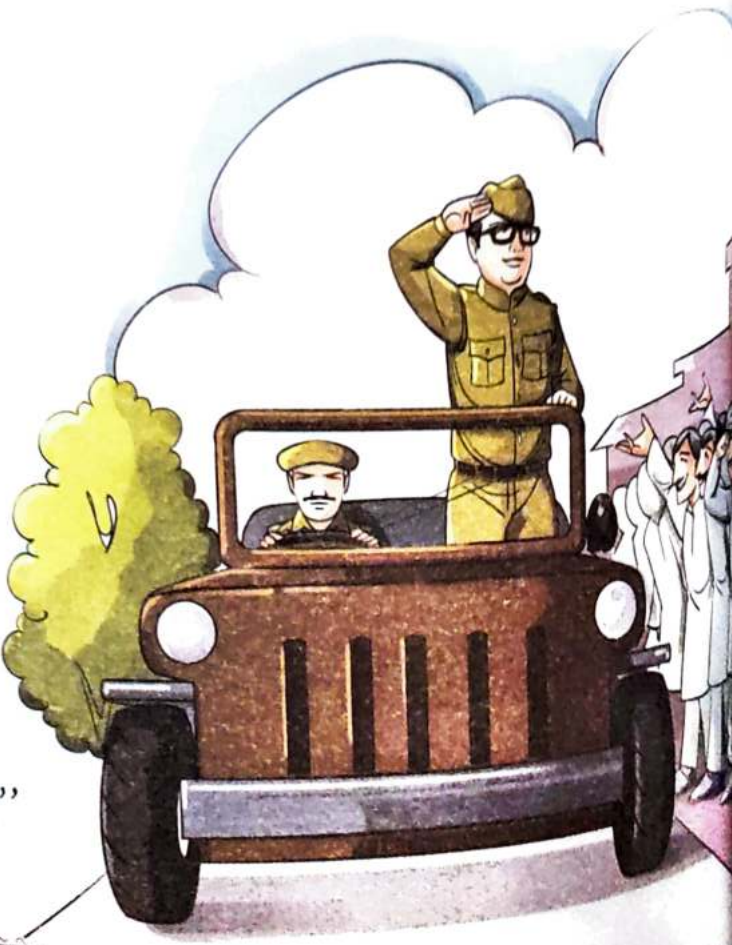

यूँ कहते-कहते वक्ता की
आँखों में रक्त उतर आया।
मुख रक्तवर्ण हो दमक उठा,
दमकी उनकी रक्तिम काया।

आजानु-बाहु ऊँची करके,
वे बोले, "रक्त तुझे देना!
इसके बदले में भारत की
आज़ादी तुम मुझसे लेना।"

"हम देंगे-देंगे खून!"
शब्द बस यही सुनाई देते थे।
रण में जाने को युवक खड़े
तैयार दिखाई देते थे।

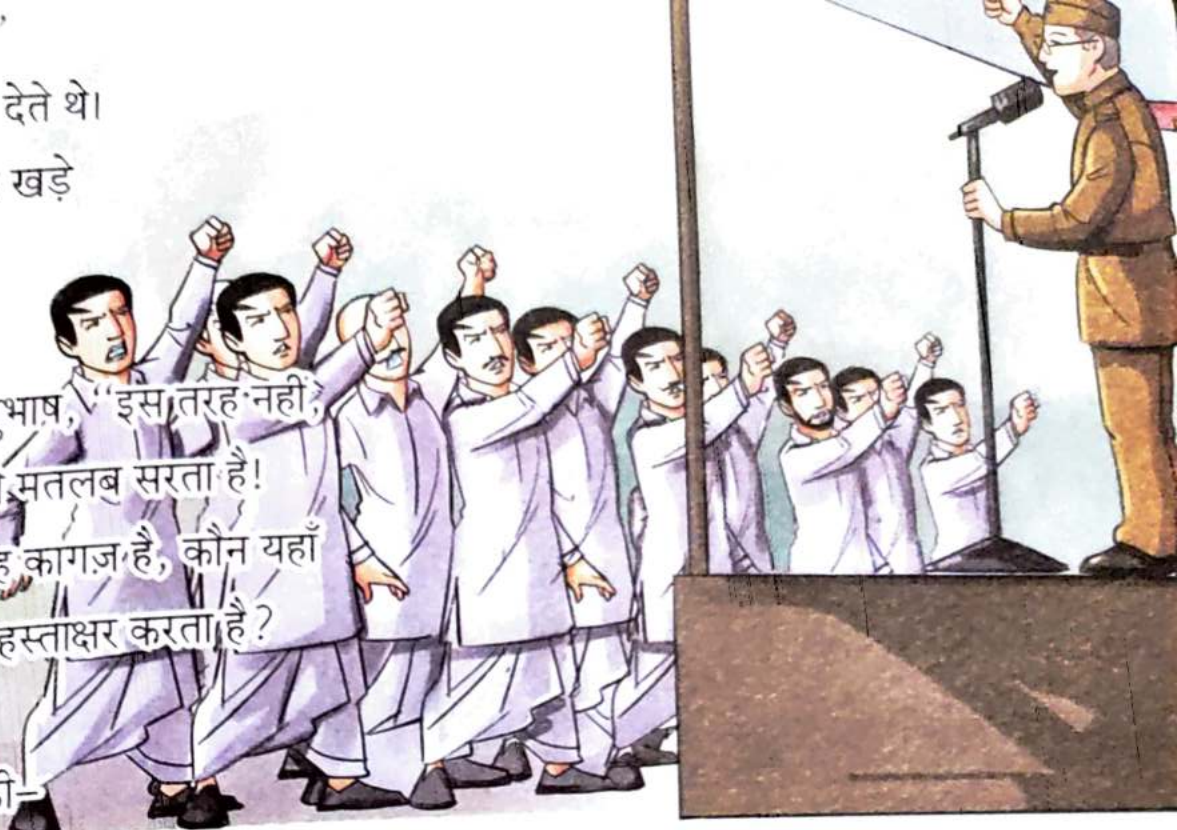

बोले सुभाष, "इस तरह नहीं,
बातों से मतलब सरता है!
लो, यह कागज़ है, कौन यहाँ
आकर हस्ताक्षर करता है?

सारी जनता हुंकार उठी–
हम आते हैं, हम आते हैं
माता के चरणों में यह लो
हम अपना रक्त चढ़ाते हैं!

साहस से बढ़े युवक उस दिन
देखा, बढ़ते ही जाते थे!
चाकू-छुरी-कटारियों से,
अपना रक्त गिराते थे!

फिर उसी रक्त की स्याही में,
वे अपनी कलम डुबोते थे!
आज़ादी के परवाने पर,
हस्ताक्षर करते जाते थे!

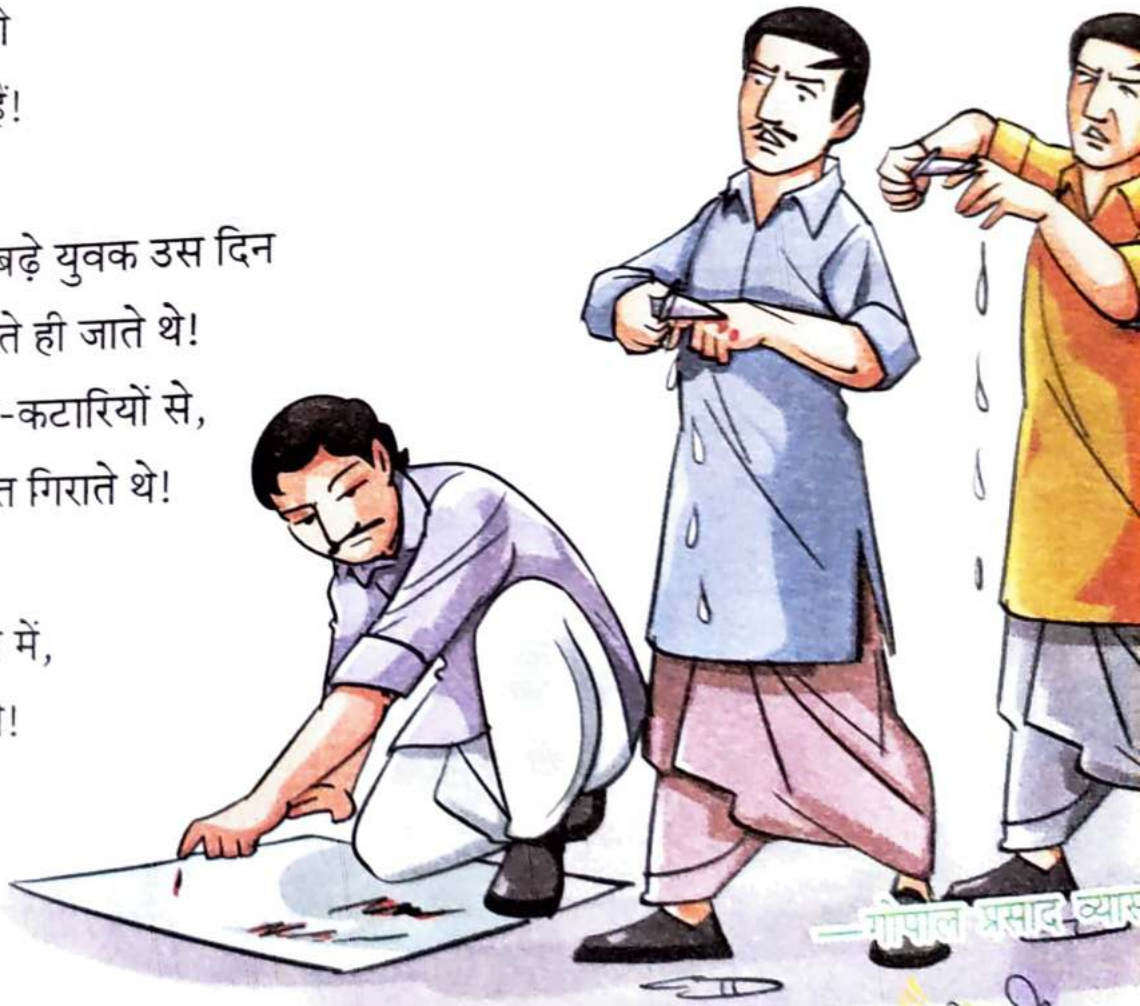

—गोपाल प्रसाद व्यास

शब्द-अर्थ खूँ - खून; कुरबानी - बलिदान; रक्तवर्ण - लाल रंग; रक्तिम - लालिमा लिए हुए; आजानु-बाहु - घुटनों तक लंबी भुजाएँ; रण - युद्ध; सरता - हल होना; हुंकार - ललकार; साहस - हिम्मत; परवाना - आज्ञा-पत्र; रणवीर - योद्धा।

अभ्यास

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) सुभाष जी ने बर्मा में लोगों से माँगी थी–

(i) आजादी ( ) (ii) कुरबानी ( )

(ख) सुभाष ने लोगों को खून के बदले देने का वायदा किया–

(i) आजादी ( ) (ii) राजगद्दी ( )

(ग) सुभाष जी ने लोगों से कागज पर–

(i) मुहर लगवाई ( ) (ii) हस्ताक्षर करवाए ( )

(घ) युवक, सुभाष के कहने पर–

(i) उत्साह में आए ( ) (ii) सहमत नहीं हुए ( )

2. रिक्त स्थान में उचित शब्द भरो–

सारी जनता .... ।

.... हम आते हैं।

माता के चरणों .... ।

.... चढ़ाते हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) लोगों ने अपने रक्त की कीमत कब पहचानी थी?

....

....

(ख) स्वतंत्रता के लिए क्या करने की बात सुभाष जी ने कही?

.....

.....

(ग) युवकों के चारों ओर से किस प्रकार के शब्द सुनाई देते थे?

.....

.....

(घ) आजादी के परवाने पर किससे हस्ताक्षर किए गए?

.....

.....

भाषा की बात

1. पढ़ो और समझो–

(क) साहस, हिम्मत, हौसला।

(ख) रक्त, खून, लहू।

(ग) मतलब, अर्थ, तात्पर्य।

(घ) काया, शरीर, देह।

2. जो शब्द क्रिया के होने के काल, स्थान, परिणाम तथा रीति संबंधी विशेषता बताते हैं, वे क्रि विशेषण कहलाते हैं।

दिए गए वाक्यों में क्रिया विशेषण शब्दों को रेखांकित करो–

(क) सुभाष बाहर जा रहे थे।

(ख) गाड़ी अभी आने ही वाली है।

(ग) इस बार ठंड अधिक हुई।

(घ) नानी जी ने बहुत आशीर्वाद दिए।

3. खाली स्थान में उचित कारक शब्द भरो–

(में, की, से, के लिए)

(क) पानी ..... गिलास लाओ।

(ख) रजाई ..... ठिठुरे पैर छुपा लो।

(ग) यह दोपहर ..... घंटी बजी है।

(घ) मजदूर गरीबी ..... छुटकारा पाना चाहता था।

कुछ करने के लिए

- **देशभक्ति पर आधारित कोई अन्य कविता ढूँढ़कर लिखो–**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- **सुभाष चंद्र बोस जी की जीवनी ढूँढ़कर पढ़ो।**
- **भारत माता की अगले पृष्ठ पर दी गई इस स्तुति का शुद्ध व ओजपूर्ण स्वर में पाठ करो।**

भारति जय-विजय करें

(कविता)

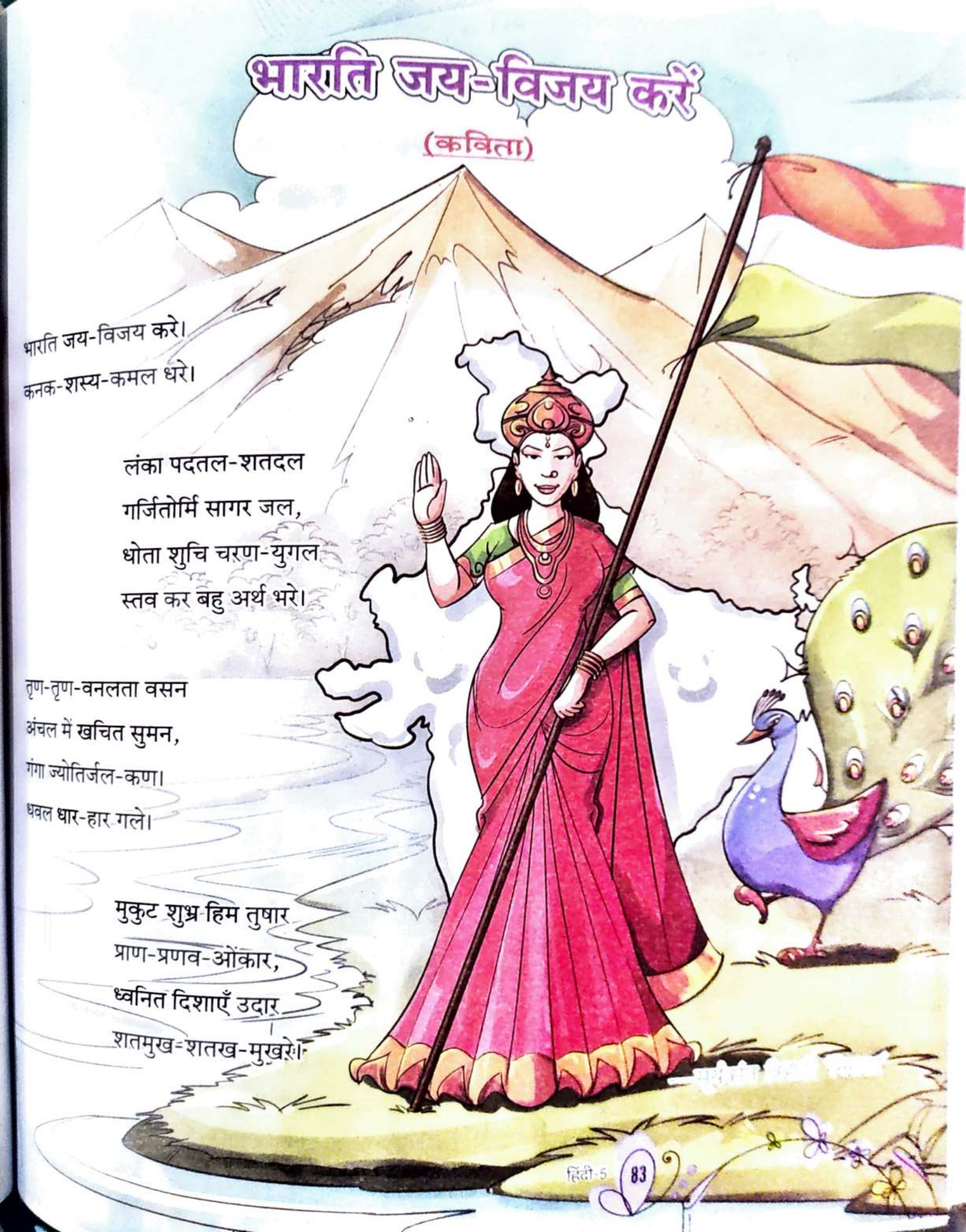

भारति जय-विजय करे।
कनक-शस्य-कमल धरे।

लंका पदतल-शतदल
गर्जितोर्मि सागर जल,
धोता शुचि चरण-युगल
स्तव कर बहु अर्थ भरे।

तृण-तृण-वनलता वसन
अंचल में खचित सुमन,
गंगा ज्योतिर्जल-कण।
धवल धार-हार गले।

मुकुट शुभ्र हिम तुषार
प्राण-प्रणव-ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार
शतमुख-शतख-मुखरे।

झूठी दुनिया

(चित्रकथा)

मोहित क्या कर रहे हो?
टी. वी. देख रहा हूँ। वाह! वह देखो च्यवनप्राश खाकर कितनी शक्ति आती है।
हाँ मम्मी, वह देखो कितनी बढ़िया कोल्डक्रीम लगा रही है करीना कपूर। इसे लगाकर मैं भी सुंदर व गोरी बनूँगी....।
और वह देखो माँ....।
बस-बस रहने दो यह सब एक झूठी दुनिया है।
हाँ, ये सब विज्ञापन हैं, इसमें सच्चाई नहीं है। शक्ति आती है, खूब काम करने और ताजे फल-सब्जियाँ आदि खाने से.....।
झूठी दुनिया?
और सुंदरता आती है सफाई रखने और मुस्करा कर अच्छे विचार और व्यवहार रखने से। किसी क्रीम आदि से नहीं।
अच्छा माँ! पर टी. वी. देखने और मोबाइल पर बातें करने से मजा तो आता है।

पर क्या तुम्हें पता नहीं टी. वी. आँखों को हानि पहुँचाता है और मोबाइल तो और भी घातक है। यह दिमाग को कमजोर बनाता है।

सच्ची दुनिया में आकर।

पर माँ, फिर हम अपना मन कैसे बहलाएँ?

सच्ची दुनिया, वो कौन सी है?

हमारे आस-पास जो लोग हैं, उनसे बातें करो, मित्रता करो, पत्रिकाएँ पढ़ो, पार्क में जाओ या आँगन में खेलो-कूदो। खूब मन लगेगा और सेहत भी ठीक रहेगी।

माँ ठीक कहती है, मैं भी जब मोबाइल पर बातें करती हूँ तो चक्कर से आने लगते हैं। अब हम सच्ची दुनिया में ही दिल बहलाएँगें।

वाह, तुम तो बड़े समझदार हो।

12 कृष्ण भक्ति के पद

श्रीकृष्ण के बचपन की लीलाओं का वर्णन हमारे कवियों ने बड़े ही सुंदर ढंग से बार-बार किया है–

अध्यापन संकेत

- बच्चों को बताएँ कि सूरदास जी ने बाल कृष्ण की छवि का वर्णन अत्यंत सूक्ष्मता से किया है।

(पद)

- श्रीकृष्ण बचपन में एक साधारण बालक की भाँति अपनी माँ से जो वार्तालाप करते हैं, यहाँ उसका सजीव वर्णन है।

(1)

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो।
मोसौ कहत मोल को लीन्हों तु जसुमति कब जायो।।
कहा कहौं एहि रिस के मारे खेलन हौं नहिं जात।
पुनि-पुनि कहत कौन है माता कौन है तेरो तात।।
गौरे नंद, जसोदा गौरी तुम कत स्यामल गात।
चुटकी दै दै हँसत ग्वाल सब सिखै देत बलबीर।।
तू मोहिं को मारन सीखी दाउहिं कबहुँ न खीझै।
मोहन को मुख रिस समेत लखि जसुमति सुनि सुनि रीझै।।
सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई जनमत ही कौ धूत।
'सूर' स्याम मोंहि गोधन की सौं हौं माता तू पूत।।

(2)

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहिं दूध पिबत भई यह, अजहुँ है छोटी।।
तू जो कहति बल की बेनि, ज्यों ह्वै है लाँबी-मोटी।
काढ़त, गुहत, न्हावत, औंछत, नागिन-सी भुई लोटी।।
काचो दूध पियावति पचि-पचि देति न माखन-रोटी।
'सूर' स्याम चिरजीवहु दोऊ, हरि-हलधर की जोटी।।

(3)

मैया मोरी मैं नहिं माखन खायौ।
ख्याल परैं ये सखा सबै मिलि, मेरो मुख लपटायौ।।
देखि तुही छींके पर भाजन, ऊँचों धरि लटकायौ।

हौं जु कहत नान्हें कर अपने मैं कैसे करि पायौ।।

मुख दधि पोंछि, बुद्धि इक कीन्ही, दोनों पीठि दुरायौ।

डारि साँटि, मुसुकाई जसोदा स्यामहिं कंठ लगायौ।

बाल विनोद मोद मन माह्यौ, गति प्रताप दिखायौ।

सूरदास जसुमति कौ यह सुख, सिव बिरंचि नहिं पायौ।।

—सूरदास

जायो- पैदा होना; रिस - क्रोध; खीझै - चिढ़ाना; तात - पिता; चबाई- झूठा; धूत - धूर्त; सौं - कसम; दाऊ- बड़ा भाई; चुटकी देना - हँसी उड़ाना; सिखै - शिक्षा; मोहिं को - मुझे; कबहुँ - कभी; धूर्त - बहुत झूठा, कपटी; रीझै - प्रसन्न होती है; गौधन - गाय रूपी धन; हौं - मैं; अजहुँ - अब भी; गुहत - गूँथना; काढ़त - बाल का काढ़ना; चिरजीवहु - लंबी आयु होना; हलधर - बलराम; कर - हाथ; जोटी - जोड़ी; विरंचि - ब्रह्मा।

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) कृष्ण को चिढ़ाते थे–

(i) संगी-साथी ( ) (ii) उनके भाई ( )

(ख) बलराम (कृष्ण के भाई) कृष्ण को कहते थे–

(i) खरीदा हुआ ( ) (ii) सगा भाई ( )

(ग) श्रीकृष्ण ने माखन स्वयं खाना

(i) स्वीकार किया ( ) (ii) अस्वीकार किया ( )

(घ) कृष्ण बढ़ाना चाहते है–

(i) अपना कद ( ) (ii) अपनी चोटी ( )

2. **पद पढ़कर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–**

(क) "मैया मोरी मैं नहिं ..... ख्याल परै ..... ।

(ख) मैया मोहि दाऊ ..... । ..... कब जायौ।

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–**

(क) बलराम क्या तर्क देखकर कृष्ण को सौतेला सिद्ध करना चाहते हैं?

.....

.....

(ख) यशोदा किसकी शपथ खाकर कृष्ण को अपना पुत्र बताती है?

.....

.....

(ग) कृष्ण दूध क्यों नहीं पीना चाहते?

.....

.....

(घ) कृष्ण माखन नहीं चुराने में अपनी क्या सफाई पेश करते हैं?

.....

.....

1. **तुक मिलाओ–**

(क) जात – .....

(ग) धूत – .....

(ङ) चोटी – .....

(छ) रोटी – .....

(ख) खायौ – .....

(घ) पायौ – .....

(च) रीझै – .....

2. **सुमेल करो–**

(अ)	(ब)
(क) माखन	(i) माता
(ख) पुनि	(ii) शिव
(ग) कबहिं	(iii) पुनः
(घ) सिव	(iv) कब
(ङ) मैया	(v) मक्खन

3. **'प्र' उपसर्ग लगाकर शब्द लिखो–**

(क) गति – .....प्रगति..... (ख) बोध – .....

(ग) माणिक – ..... (घ) बंध – .....

(ङ) ताप – .....

कुछ करने के लिए

- दिए गए पदों का अभिनय विद्यालय मंच पर उसी विशेष वेशभूषा को धारण करते हुए करो, जैसी बालकृष्ण की लीलाओं में चित्रित की गई है।
- आपकी गली-मुहल्ले में क्या जन्माष्टमी पर श्रीकृष्ण की झाँकियाँ सजाई जाती हैं? यदि हाँ, तो उसका वर्णन करो कि उसका आयोजन किस प्रकार किया जाता है।
- बाँसुरी का एक चित्र बनाओ–

13 बचपन के दिन

बचपन के दिनों की स्मृतियाँ भुलाए नहीं भूलतीं।

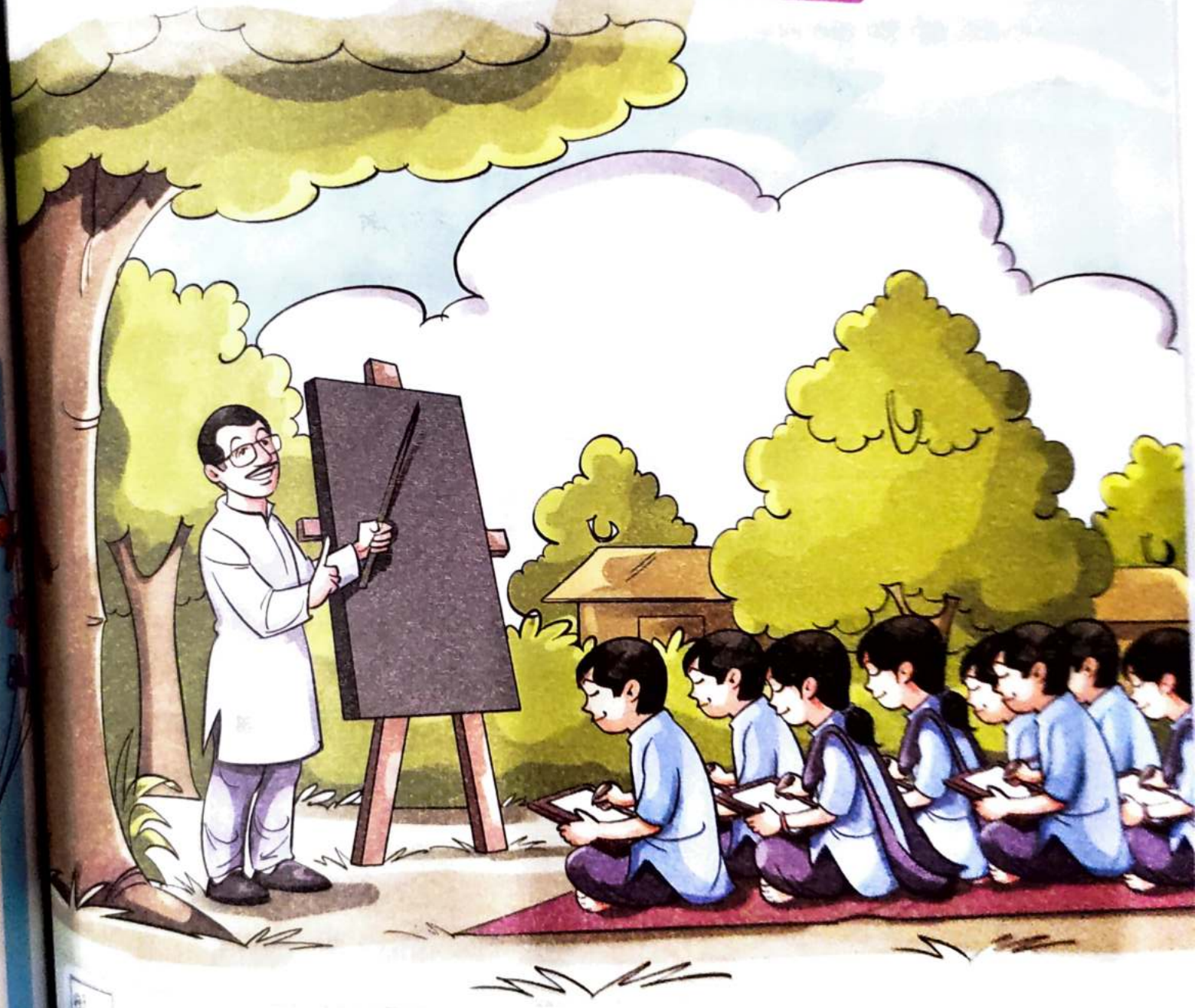

अध्यापन संकेत

- पाठ के माध्यम से बच्चों को उनके बचपन की यादगार बातों का वर्णन करने को कहें।

(संस्मरण)

- बचपन के दिन बड़े अनोखे होते हैं, कोई उन्हें कभी नहीं भूलता। यहाँ भारत के प्रथम राष्ट्रपति अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए लिखते हैं।

पाँचवें या छठे बरस में मेरा अक्षरारंभ कराया गया था। उस समय की प्रचलित प्रथा के अनुसार अक्षरारंभ मौलवी साहब ने बिसमिल्लाह के साथ कराया था। जिस दिन अक्षरारंभ हुआ, मौलवी साहब आए मिठाइयाँ बाँटी गईं। हम तीन विद्यार्थी उनके सुपुर्द किए गए— एक मैं और दूसरे दो, जो अपने के ही चचेरे भाई थे। यमुना प्रसाद जी सबसे बड़े थे। वे तमाम खेल और लड़कपन की शैतानी में रहा करते थे। उनके एक चाचा, जो मेरे भी चाचा थे, बड़े मज़ाक पसंद थे। वे मेरे पिताजी के छोटे थे, पर पिताजी के कई गुण उन्होंने भी सीखे थे। वे घोड़े की सवारी करते थे। बंदूक और गुलेल चलाना भी खूब जानते थे। फ़ारसी भी पढ़े थे और शतरंज भी अच्छा खेलते थे।

मौलवी साहब, जो हम लोगों को पढ़ाने आए, विचित्र स्वभाव के आदमी थे। उनका बहुत सी बातों का दावा था। बलदेव चाचा के मज़ाक के लिए वे एक बहुत ही उपयोगी साधन बन गए। चाचा तरह-तरह की बातें मौलवी साहब को सुनाते और उनको उत्साह देकर यह कहलवा देते कि वे भी, चाहे कोई भी काम क्यों न हो, जानते या कर सकते हैं।

मौलवी साहब का दावा था कि वे शतरंज खेलना भी खूब जानते हैं। बलदेव चाचा मौलवी साहब को शतरंज खिलाते पर वे कभी न जीतते। हम बच्चे इन मज़ाकों को कौतूहल से सुनते। हँसने का मौका आ जाए तो हँसना मुश्किल हो जाता था।

एक दिन बलदेव चाचा ने मौलवी साहब से कहा कि बाग में बंदर आ गए हैं। उनको गुलेल मारकर भगाया जा सकता है। इतना सुनना था कि मौलवी साहब बोल उठे कि वे गुलेल चलाना खूब जानते हैं। बलदेव चाचा सब

समझ गए। मज़ाक के लिए उन्हें बगीचे में ले गए। गुलेल और गोली उनके सुपुर्द करके कहा कि खूब खींचकर एक बंदर को मारिए। मौलवी साहब ने खूब खींचकर गोली बंदर को मारने की कोशिश की। इतने में ही उनके बाएँ हाथ के अँगूठे से तरतर खून टपकने लगा और चोट के दर्द से वे सहमकर बैठ गए। गोली बंदर के बजाए वे खुद को मार बैठे थे।

एक दिन सब लोग शाम को टहलने निकले। मौलवी साहब और बलदेव चाचा भी थे। तरह-तरह की बातें हो रही थीं कि इतने में सामने से साँड़ आ गया। सबने कहा, "यह साँड़ लोगों को मारता है।" बलदेव चाचा के इशारे पर मौलवी साहब कब डरने वाले थे, वे बेखौफ़ आगे बढ़े कि साँड़ ने उन्हें दे पटका।

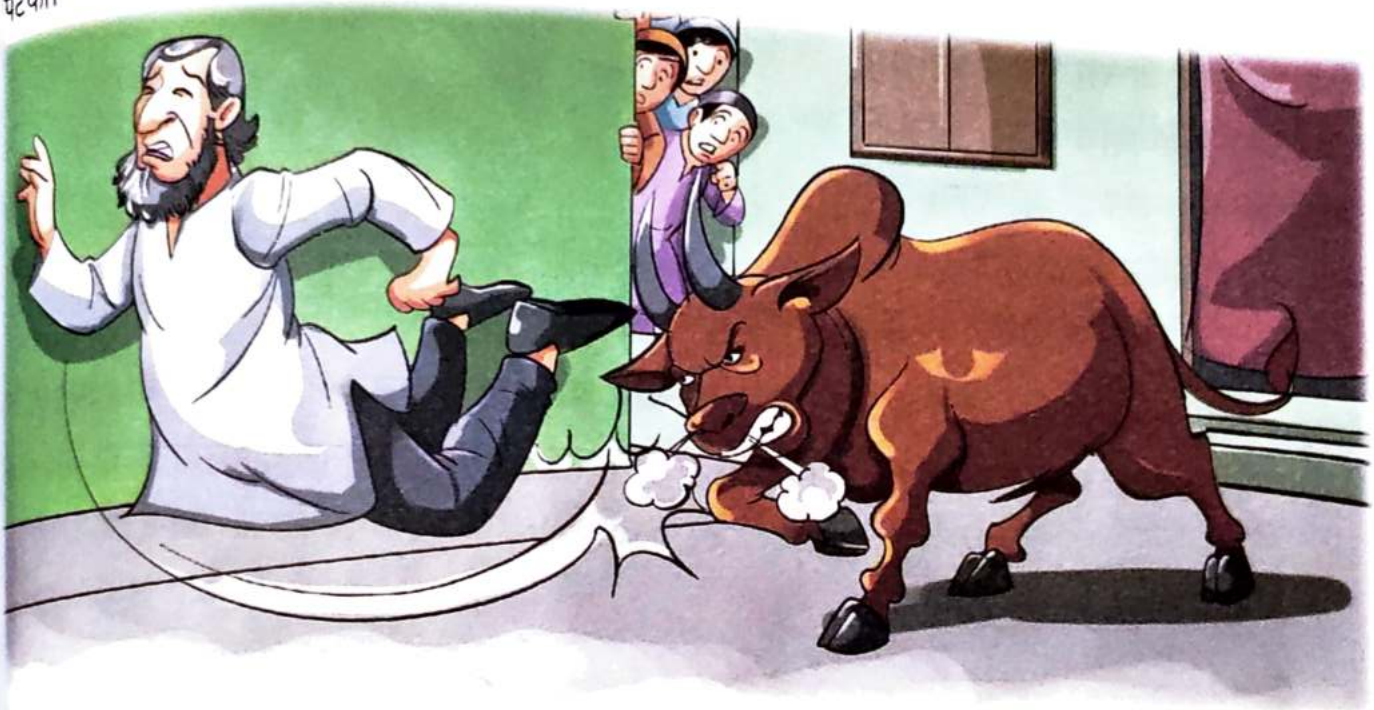

एक दिन बलदेव चाचा ने मौलवी साहब को बंदूक चलाने की शिक्षा देनी चाही। कोई काम वे नहीं जानते, इस बात को कबूल करना, मौलवी साहब अपनी शान के खिलाफ समझते थे। उन्होंने साफ कह दिया कि वे अच्छा निशाना लगा सकते हैं। वे बंदूक लेकर चल दिए। कुछ दूरी पर एक ऊँचे दरख्त पर एक गिद्ध बैठा नज़र आया। वह काफी ऊँचाई पर था और बंदूक खड़ी करके ही निशाना लगाया जा सकता था। मौलवी साहब को जो बंदूक दी गई थी, वह पुरानी किस्म की थी।

मौलवी साहब ने तो पहले कभी बंदूक चलाई ही नहीं थी।

उन्होंने खड़ी बंदूक को सीने पर रखकर ज्यों ही घोड़ा दबाया कि गिद्ध के स्थान पर मौलवी साहब स्वयं गिर पड़े। उन्हें उठाकर घर लाया गया।

इस प्रकार के मज़ाकों के बीच हम फ़ारसी पढ़ते रहे। कुछ महीने बाद मौलवी साहब चले गए। दूसरे मौलवी साहब बुलाए गए। वे बहुत गंभीर थे और अच्छा पढ़ाते भी थे। हफ्ते में साढ़े पाँच दिन फ़ारसी पढ़ाते थे। बृहस्पतिवार की दोपहर के बाद और शुक्रवार की दोपहर तक फ़ारसी से छुट्टी रहती थी तब गिनती सीखते थे। खेलने-कूदने के लिए भी समय दिया जाता था।

हम लोग खूब सवेरे उठकर मौलवी साहब के पास जाते थे। वे एक कोठरी में रहा करते थे। सामने आँगन में तख्तपोश पर बैठकर हम पढ़ा करते थे। सवेरे आकर पहले पढ़ा हुआ पाठ दोहराया जाता। जो जितना जल्दी याद कर लेता, उसको उतना ही जल्द नया सबक पढ़ा दिया जाता था। तब तक सूर्योदय हो जाता। हम अपना मुँह-हाथ धो लेते और माँ के पास कुछ खाने के लिए पहुँच जाते।

प्राय: आधे घंटे की छुट्टी मिलती। नाश्ता करके लौटने पर सबक याद करना पड़ता और सबक याद करके सुना देने के बाद मौलवी साहब हुक्म देते, किताब बंद करो। किताब बंद करके तख्ती निकालनी पड़ती। तख्ती भर जाती तो उसे धोना पड़ता। इस

क्रिया में भी कुछ समय खेलने को मिलता। दोपहर को नहाने और खाने के लिए एक या डेढ़ घंटे की छुट्टी मिलती और खाकर फिर उसी तख्तपोश पर सोना पड़ता। मौलवी साहब चारपाई पर सोते। दोपहर के बाद दूसरा सबक मिलता और उसको याद करके सुनाने पर ही खेलने की छुट्टी मिलती।

संध्या को जल्द नींद आती। डर रहता कि मौलवी साहब हमें पलक झपकाते देख न लें, नहीं तो मार पड़ती। जल्दी छुट्टी के दो उपाय थे। खेल-कूद में यमुना भाई लीडर थे। जल्दी छुट्टी पाने के लिए भी उपाय वही करते। पढ़ने के लिए तेल का दीया जलाया जाता था। यमुना भाई रेत की छोटी पोटली बना लेते और छिपाकर उसे दीये में रख देते। वह शीघ्र ही तेल सोख लेती और दीया जल्द बुझने पर आ जाता। मौलवी साहब दाई पर गुस्सा होते कि तेल कम क्यों डाला, और वे मजबूर होकर किताब बंद करने का हुक्म दे देते।

और जो कुछ फ़ारसी का ज्ञान हुआ, उन्हीं मौलवी साहब ने दिया। हम सब भी उनको प्यार करने लगे थे। जब घर छोड़कर छपरा अंग्रेज़ी पढ़ने के लिए जाना पड़ा तो मौलवी साहब को और हम लोगों को बड़ा दुख हुआ।

—डॉ राजेंद्र प्रसाद

(आत्मकथा से)

अक्षरारंभ - अक्षरों को पढ़ने की शुरुआत; कौतूहल - हैरानी; बेखौफ - निडर; दरख्त - पेड़।

अभ्यास

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) मौलवी साहब का स्वभाव था–

(i) सामान्य ( ) (ii) विचित्र ( )

(ख) बलदेव चाचा मौलवी साहब को दिलाते थे–

(i) उत्साह ( ) (ii) क्रोध ( )

(ग) मौलवी साहब की गोली लगा–

(i) बंदर को ( ) (ii) उन्हें स्वयं को ही

(घ) तख्ती भर जाने पर–

(i) उसे धोना पड़ता था ( ) (ii) नई तख्ती मिलती थी

2. सत्य कथनों के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ लगाओ–

(क) मौलवी साहब तख्त पर सोते थे। ( )

(ख) बच्चे चारपाई पर सोते थे। ( )

(ग) बच्चे मौलवी साहब को प्यार करने लगे थे। ( )

(घ) गोली चलाने पर मौलवी साहब खुद गिर पड़े। ( )

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) बलदेव चाचा में क्या-क्या गुण थे?

.....

.....

(ख) चाचा मौलवी साहब से क्या कहलवा लेते थे?

.....

.....

(ग) साँड़ के सामने जाने पर मौलवी साहब का क्या हाल हुआ?

.....

.....

(घ) जल्दी छुट्टी पाने के लिए यमुना भाई क्या उपाय करते थे?

.....

.....

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन लिखो–

(क) प्रथा – ..... (ख) मिठाई – .....

(ग) शैतानी – ..... (घ) मुश्किल – .....

(ङ) बात – .....

(छ) घोड़ा – .....

(झ) किताब – .....

(च) बंदूक – .....

(ज) छुट्टी – .....

(ञ) तख्ती – .....

2. जो शब्द दो शब्दों और वाक्यों को जोड़ते हैं, वे समुच्चयबोधक कहलाते हैं। सही समुच्चयबोधक भरकर वाक्य पूरे करो–

अतः, और, इसलिए

(क) कहीं पुस्तक तो नहीं गिरी ..... मैं झाँककर देखने लगी।

(ख) सुमित ..... अनिल चंडीगढ़ गए हैं।

(ग) आगे विद्यालय है ..... वाहन की गति कम करें।

3. सुमेल करो–

(अ)	**(ब)**
(क) किताब	(i) रक्त
(ख) खून	(ii) पिटाई
(ग) मार	(iii) कठिन
(घ) किस्म	(iv) पुस्तक
(ङ) मुश्किल	(v) प्रकार

4. वाक्यों में प्रयोग करो–

(क) उत्साहवर्धक – .....

.....

(ख) सार्वजनिक – .....

.....

(ग) साक्षर – .....

.....

(घ) निष्फल – .....

.....

कुछ करने के लिए

- आपको भी अपनी छोटी कक्षाओं में अनेक अध्यापकों से पढ़ने का अवसर मिला होगा, उनका कोई संस्मरण कक्षा में सुनाओ।
- आपको भी पढ़ने के लिए बँधकर बैठने में कठिनाई होती है या आप सहज रूप से कई पीरियड पढ़ सकते हैं? बताओ।
- 'मेरे अध्यापक' विषय पर एक अनुच्छेद लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

कड़वी मिठाई

(कहानी) पठन हेतु

इज़राइल के एक छोटे से शहर में एक धनी आदमी रहता था। उसका नाम था कादिश। कादिश का इकलौता बेटा था– अतजल। देखने में सुंदर, पर स्वभाव से आलसी। स्वर्ग की कहानियाँ बहुत अच्छी लगती थीं उसे। वह हर एक से कहानी सुनाने का आग्रह किया करता। हरदम कहानियों में खोया रहता था।

अतजल ने सुना था– स्वर्ग में सब आराम करते हैं। वहाँ किसी को कोई काम नहीं करना पड़ता। इच्छा करते ही हर चीज मिल जाती है। बच्चों को स्कूल भी नहीं जाना पड़ता। फरिश्ते सारा काम करते हैं। वह स्वर्ग की तुलना अपने घर से करता तो परेशान हो उठता। यहाँ तो माँ हर समय चिल्लाती रहती है। हर समय डाँट-फटकार सुननी पड़ती है।

अतजल सोचता रहा, सोचता रहा। वह चाहता था कि किसी तरह स्वर्ग चला जाए। लेकिन उसे पता था, मनुष्य मरने के बाद ही स्वर्ग जा सकता है। बस, उसने मरने की ठान ली।

वह चुपचाप जाकर बिस्तर पर लेट गया। जो भी उसे उठाने आता, उससे कह देता, "मैं तो मर गया हूँ।" और खाना-पीना छोड़ दिया। माँ बहुत दुखी हो गईं। उसे समझाया, पर वह बोला, "माँ, तुम मुझसे कैसे बात कर रही हो? मैं तो मर चुका हूँ।"

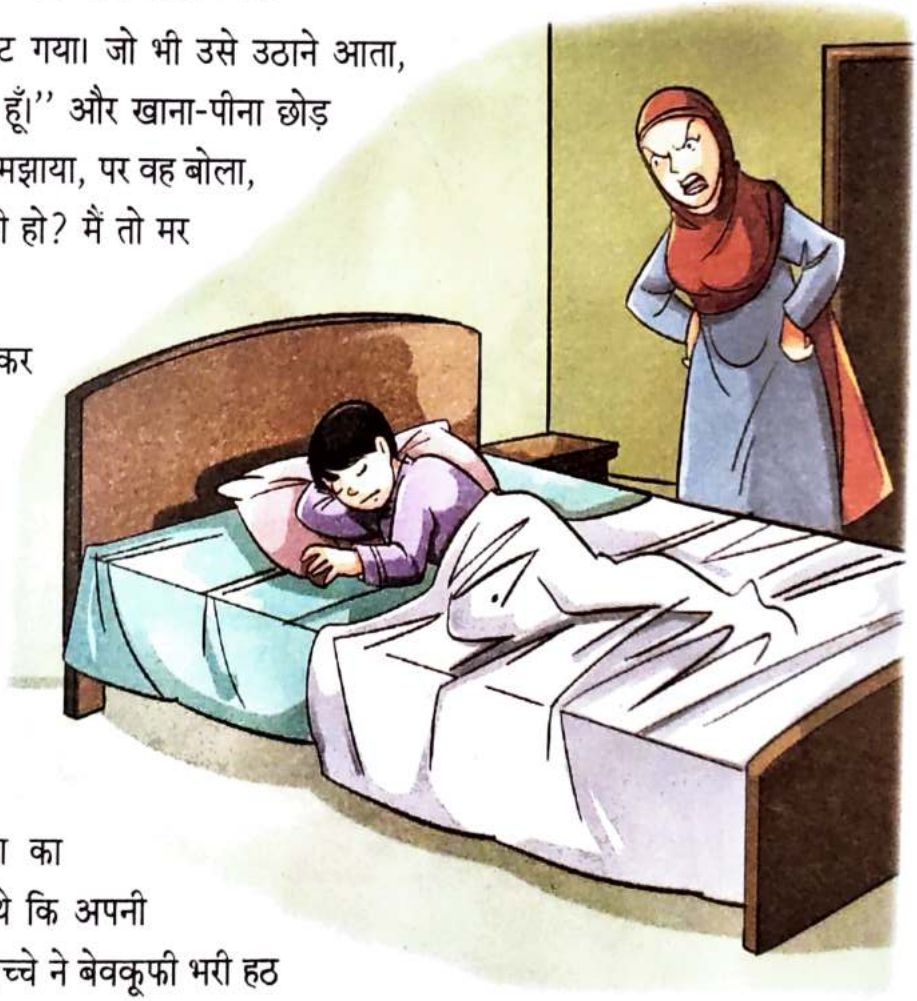

उसकी बहकी-बहकी बातें सुनकर घरवाले बहुत दुखी हुए। माँ जैसे-तैसे करके उसे कुछ खिलाती पर अतजल दिन-प्रतिदिन कमजोर होता गया। कई हकीम-वैद्य आए, पर वे कुछ न कर सके। हर बात के जवाब में अतजल यही कहता, "मैं तो मर चुका हूँ।"

अतजल के माता-पिता की चिंता का ठिकाना न रहा। वे इसी फिक्र में थे कि अपनी इकलौती संतान को कैसे बचाएँ? बच्चे ने बेवकूफी भरी हठ ठान ली थी और मौत के दरवाजे पर जा पहुँचा था।

आखिर अतजल के पिता कादिश डॉ. योत्स के पास गए। वे एक मशहूर डॉक्टर थे। डॉ. योत्स ने सारी बात सुनने के बाद कहा, "मैं उसका इलाज कर सकता हूँ, पर एक शर्त है। मैं जैसा कहूँगा, वैसा ही करना पड़ेगा।"

मरता क्या न करता, कादिश ने डॉ. योत्स की शर्त मान ली। बात बेटे का जीवन बचाने की जो थी। डॉ. योत्स कादिश के साथ आ गए। उन्होंने मकान के एक कमरे को सुंदर ढंग से सजाया। पलंग पर फूल बिखेर दिए। कई नौकर परियों के पंख लगाकर देवदूत बन गए। कमरे में दीवारों पर लिख दिया गया स्वर्गलोक। इसके बाद डॉ. योत्स कादिश के साथ अतजल के कमरे में गए। उन्होंने कहा, "अरे, यह बच्चा तो मर चुका है। इसे दफनाते क्यों नहीं!"

डॉ. योत्स की बात सुनकर अतजल खुशी से चहकने लगा। उसने कहा," मैं तो कब से यही कह रहा हूँ। दफनाने के बाद ही तो स्वर्ग जाता है आदमी।"

झूठ-मूठ की एक अरथी बनाई गई, फिर उस पर अतजल को लिटाकर सब कब्रिस्तान की ओर ले चले। इस बीच बेहोशी की दवा सूँघने से अतजल नींद में डूब गया। तब उसे विशेष रूप से सजाए गए कमरे में ले जाया गया।

जब अतजल की आँख खुली तो वह हैरानी से चारों ओर देखने लगा। दीवार पर लिखे शब्द पढ़कर वह बहुत ही खुश हुआ। समझ गया कि मरने के बाद वह सचमुच स्वर्ग में आ गया है। वहाँ न उसके माँ-बाप थे, न ही दोस्त। गली-मोहल्ले वाले भी दिखाई नहीं दे रहे थे।

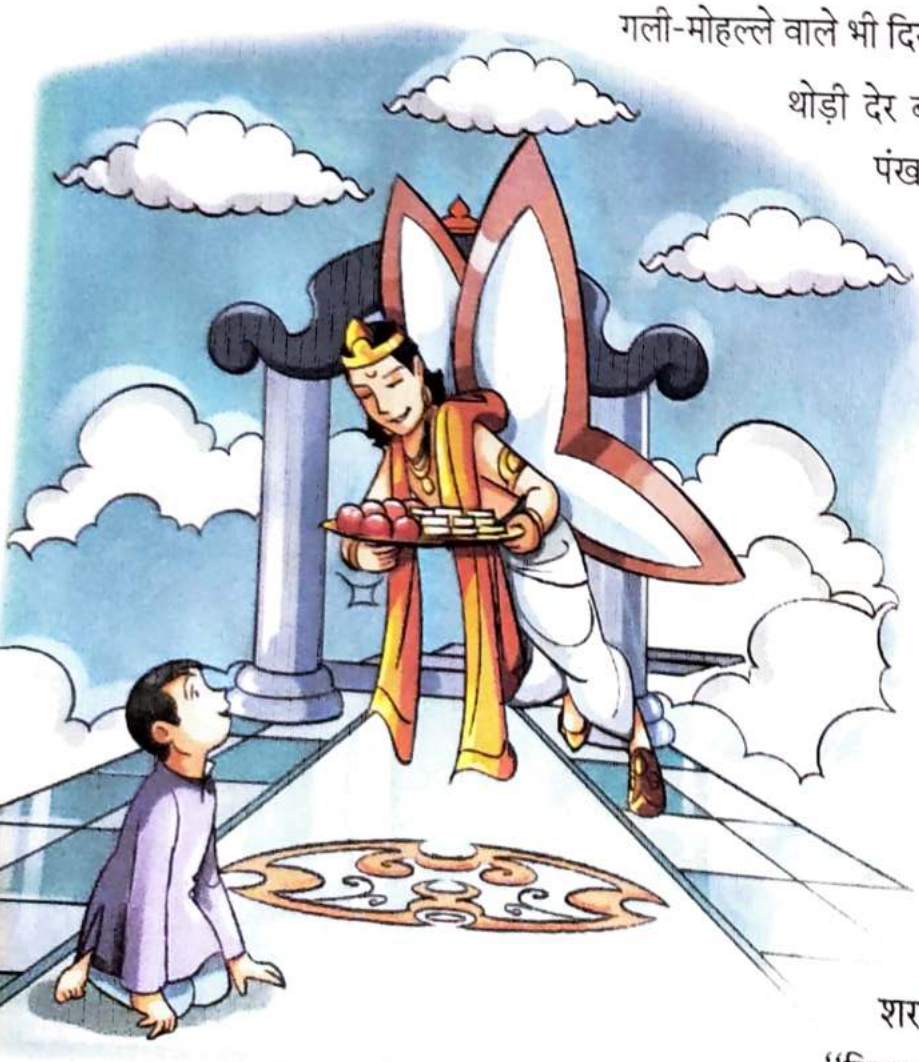

थोड़ी देर बाद देवदूत की पोशाक में परी जैसे पंख लगाए एक नौकर वहाँ आया। उसने कहा, "अतजल, स्वर्ग में तुम्हारा स्वागत है। मैं देवदूत हूँ।"

अब तो अतजल को पक्का विश्वास हो गया। उसने कहा, "मुझे भूख लगी है।" पलक झपकते ही नौकर बढ़िया-बढ़िया व्यंजनों से भरा थाल ले आया। ढेर सारी मिठाइयाँ थीं। अतजल ने छककर खाया और फिर सो गया। नींद खुलने पर पानी माँगा तो बादाम का शरबत हाजिर।

शरबत पीकर अतजल ने पूछा, "कितना समय हुआ है?"

देवदूत बने नौकर ने कहा, "यह स्वर्गलोक है। यहाँ समय ठहर जाता है। न रात होती है, न दिन निकलता है। सदा ऐसा ही रहता है।"

यह सुनकर अतजल को अच्छा तो न लगा, फिर भी वह खुश था। सोचा, अब स्वर्ग में दिन आराम से कटेंगे। इस बार नींद से जागा तो उसने कहा, "कुछ चटपटी, नमकीन चीज लाओ।"

नौकर ने बताया, "स्वर्ग में हर चीज मीठी होती है। वही मिल साकती है।" मिठाई खा-खाकर अतजल का जायका बिगड़ गया था। वह नमकीन खाना चाहता था। पानी की जगह मीठा शरबत मिलता था। वह पानी पीने को तरस गया। वह इधर-उधर घूमने लगा। उसे कई परियाँ, कई देवदूत नजर आए। पर किसी ने उससे बात नहीं की। हाँ, वह कोई भी वस्तु माँगता तो तुरंत ला देते।

अतजल उदास हो उठा। उसे माँ और पिता याद आ रहे थे। वह अपने दोस्तों से मिलना चाहता था। उसने एक देवदूत से पूछा, "मेरे माता-पिता यहाँ कब आएँगे?

"उनके आने में तो अभी बहुत वर्ष बाकी हैं। उन्हें काफी समय तक पृथ्वी पर रहना पड़ेगा।"

"और मेरे दोस्त? वे कब आएँगे?"

"तुम्हारे दोस्त सत्तर वर्ष बाद आएँगे।" देवदूत बोला।

यह सुनकर अतजल रो पड़ा। बोला, "मैं धरती के लोगों से मिलना चाहता हूँ। मुझसे पहले जो बच्चे यहाँ आए हैं, उन्हीं को बुला दो।"

देवदूत हँसकर बोला, "यह नहीं हो सकता। यहाँ सबका अपना-अपना स्वर्ग है। जो जहाँ है, वहीं रहता है।"

यह सुनकर तो अतजल की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। हर समय मीठी चीजें खाने से वह परेशान हो गया। अकेलापन उसे डराने लगा। उसे नींद न आती। खिड़कियों से बाहर झाँकने की कोशिश करता तो उसे कुछ दिखाई न देता। हर तरफ मोटे-मोटे परदे पड़े थे। अतजल अपने स्वर्ग में अकेले कैदी की तरह हो गया था। वह रह-रहकर रो पड़ता। चिल्ला उठता।

"मैं स्वर्ग में नहीं रहना चाहता। मुझे मेरे घर वापस भेज दो। मुझे माँ डाँटेंगी तो कोई बात नहीं, सह लूँगा। मैं अपने दोस्तों के साथ खेलना चाहता हूँ। पढ़ना चाहता हूँ।" उसने गिड़गिड़ाते हुए एक देवदूत से कहा जो उसके लिए मिठाई लेकर आया था।

देवदूत बोला, "जो एक बार स्वर्ग में आ जाता है, उसे हमेशा यहीं रहना पड़ता है। वह कहीं नहीं जा सकता। वैसे भी धरती पर तुम्हें सब भूल चुके होंगे। अतजल को माँ-बाप का दुखी चेहरा याद आया, उनकी सिसकियाँ कानों में गूँजने लगीं। वह चीखा, "वे मुझे कभी नहीं भूल सकते। ऐसा कभी नहीं हो सकता।" और सुबक-सुबककर रोने लगा।

एक दिन वह रो रहा था, तभी देवदूत भागता हुआ आया। बोला, "अतजल, भगवान् ने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली। कुछ गड़बड़ हो गई थी। हमें तो अतजल नामक दूसरे लड़के को स्वर्ग लाना था, पर गलती से हम तुम्हें ले आए। तुम्हें शीघ्र ही धरती पर वापस भेज देंगे।"

अतजल खुश हो गया। बाद में बेहोशी की दवा मिली मिठाई खिलाकर उसे बेहोश कर दिया गया। फिर उसे लाकर उसके कमरे में लिटा दिया गया।

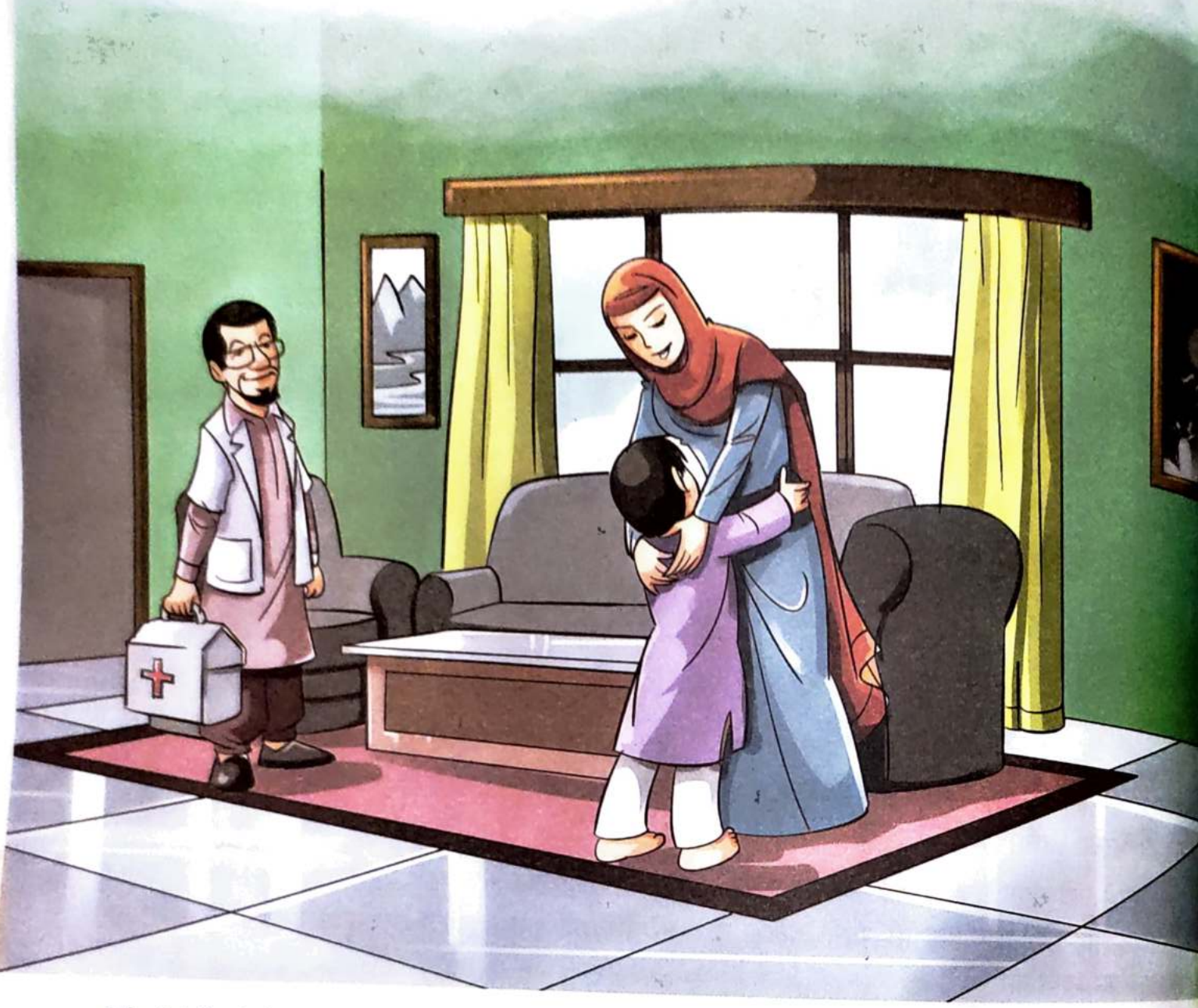

माँ के झिंझोड़ने से अतजल की आँखें खुलीं। वह चौंककर देखने लगा। सचमुच वह स्वर्ग में नहीं, अपने ही कमरे में था। सब तरफ आवाजें गूँज रही थी। अतजल उठा और माँ से लिपट गया। उसने कहा 'माँ, स्वर्ग अच्छी जगह नहीं है। मैं पढ़ूँगा, मेहनत करूँगा और यहीं रहूँगा।''

दूर कोने में खड़े डॉ. योत्स हँस पड़ें।

—इसाक वाशेविस सिंगर

14 उठो धरा के अमर सपूतो

नए सवेरे की भाँति प्रतिपल नया सोचने व करने का संकल्प ही प्रगति की निशानी है–

अध्यापन संकेत

- कविता के माध्यम से बच्चों को नए-नए अच्छे कार्य करने को प्रोत्साहित करें।

(कविता)

- नए निर्माण के लिए मन में दृढ़ संकल्प को जगाने की आवश्यकता पर यहाँ बल दिया गया है

उठो, धरा के अमर सपूतो!
पुनः नया निर्माण करो।
जन-जन के जीवन में फिर से
नव स्फूर्ति, नव प्राण भरो।

नया प्रात है, नई बात है
नई किरन है, ज्योति नई
नई उमंगें, नई तरंगें
नई आस है, साँस नई।
युग-युग के मुरझे सुमनों में
नई-नई मुस्कान भरो।

उठो, धरा के अमर सपूतो!
पुनः नया निर्माण करो।।1।।

डाल-डाल पर बैठ विहग कुछ
नए स्वरों में गाते हैं।
गुन-गुन, गुन-गुन करते भौंरे
मस्त उधर मँडराते हैं।
नवयुग की नूतन वीणा में
नया राग, नव गान भरो।

उठो, धरा के अमर सपूतो!
पुनः नया निर्माण करो।।2।।

कली-कली खिल रही इधर
वह फूल-फूल मुस्काया है।
धरती माँ की आज हो रही
नई सुनहरी काया है।
नूतन मंगलमय ध्वनियों से
गुंजित जग-उद्यान करो।

उठो, धरा के अमर सपूतो!
पुनः नया निर्माण करो।।3।।

सरस्वती का पावन मंदिर
शुभ संपत्ति तुम्हारी है।
तुममें से हर बालक इसका
रक्षक और पुजारी है।
शत-शत दीपक जला, ज्ञान के
नवयुग का आह्वान करो।

उठो, धरा के अमर सपूतो!
पुनः नया निर्माण करो।।4।।

—द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

शब्द-अर्थ

धरा - पृथ्वी, धरती; स्फूर्ति - उमंगपूर्ण उत्साह; नव प्राण - नया जीवन; आस - आशा; विहग - पक्षी; नूतन - नया, नई; काया - शरीर; मंगलमय - मंगल (कुशलता) से पूर्ण; गुंजित करो - गुँजा दो; जग-उद्यान - संसार रूपी उद्यान (रूपक अंलकार); पावन - पवित्र; रक्षक - रक्षा करने वाला; शत - सौ; आह्वान करो - पुकारो, बुलाओ।

अभ्यास

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) जन-जन के जीवन में भरनी है–

(i) नव स्फूर्ति ( ) (ii) गंध ( )

(ख) दीपक जलाने हैं–

(i) तेल के ( ) (ii) ज्ञान के ( )

(ग) जग रूपी उद्यान को गुँजाना है–

(i) पक्षियों के स्वर से ( ) (ii) मंगलमय ध्वनियों से ( )

(घ) हमारी संपत्ति है–

(i) सरस्वती का पावन मंदिर ( ) (ii) सड़क व ट्रेन ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

कली-कली .....

..... है।

धरती माँ की .....

..... सुनहरी काया है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) कविता में क्या-क्या नया कहा गया है?

.....

.....

(ख) डालों पर बैठे पक्षी क्या कर रहे हैं?

.....

.....

(ग) नवयुग की नूतन वीणा में क्या भरना है?

.....

.....

(घ) सरस्वती के पावन मंदिर का रक्षक और पुजारी कौन है?

.....

.....

भाषा की बात

1. सुमेल करो–

(अ)	**(ब)**
(क) सपूत	(i) अपावन
(ख) पावन	(ii) पुरातन
(ग) नूतन	(iii) मुरझाना
(घ) शुभ	(iv) कपूत
(ङ) खिलना	(v) अशुभ

2. 'नव' उपसर्ग लगाकर लिखो–

(क) .....नव..... + युग – .....नवयुग.....

(ख) ..... + युवक – .....

(ग) ..... + निर्माण – .....

(घ) ..... + युवती – .....

(ङ) ..... + रात्रि – .....

3. **सही स्थान पर लिखो–**

वीणा, विहग, स्वर, मंदिर, उद्यान, फूल, सपूत, पुजारी, स्फूर्ति, प्राण।

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग

4. **निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग करो–**

(क) धरा – .....

.....

(ख) जीवन – .....

.....

(ग) प्रात – .....

.....

(घ) ज्योति – .....

.....

कुछ करने के लिए

- इस कविता का हाव-भाव सहित सामूहिक गान विद्यालय मंच पर करो।
- आप अपने देश में क्या नया करना चाहते है? अपने विचार व्यक्त करो।

प्रश्न पत्र - I

(पाठ 1 से 8)

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) विचलित मनुष्य शांति खोजने आते हैं–

(i) रूस ( ) (ii) भारत ( )

(ख) मौसी ने सरपंच बनाया–

(i) समझू साहू को ( ) (ii) अलगू चौधरी को ( )

(ग) जुम्मन और अलगू–

(i) फिर से मित्र बन गए ( ) (ii) शत्रु ही बने रहे ( )

(घ) बच्ची जाना चाहती है–

(i) घूमने ( ) (ii) वापिस दादी के घर ( )

2. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखो–

(क) जो वंदना के योग्य है – .....

(ख) व्यसन करने वाला – .....

(ग) संकट देखकर भाग जाने वाला – .....

(घ) जिसकी उपेक्षा हो – .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) मौसी को जुम्मन से क्या शिकायत थी?

(ख) दादी जी कैसे बोलती थी?

(ग) हमारे देश और समाज के टुकड़े किन कारणों से हो गए?

(घ) संस्कृत के शब्द किन-किन देशों की भाषा में मिलते हैं?

4. वर्ण विच्छेद करो–

(क) अनोखा – .....

(ख) सपूत – .....

(ग) धरती – .....

(घ) सेनानी – .....

5. निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से सुमेल करो–

(क) एकता	(i) अधर्म
(ख) धर्म	(ii) गुलाम
(ग) पूर्व	(iii) अनेकता
(घ) आजाद	(iv) लाभदायक
(ङ) हानिकारक	(v) पश्चिम

6. निर्देशानुसार काल बदलो–

(क) भाषा समय के अनुसार बदलती रही थी। ..... (वर्तमान काल)

(ख) हम बर्मा जाते हैं। ..... (भविष्यकाल)

(ग) हमारे पूर्वज विदेशों मे जाते हैं। ..... (भूतकाल काल)

7. वर्तनी शुद्ध करो–

(क) परधानमनतरी – ..... (ख) पूरवज – .....

(ग) वीदेश – ..... (घ) जाती परथा – .....

8. अर्थ लिखो–

पोशाक, बुनियाद, मुल्क, मिसाल, लचीला, स्वयंभू, दरख्त, बेखौफ।

9. 'इत' प्रत्यय जोड़कर लिखो–

(क) आलोक – ..... (ख) प्रकाश – .....

(ग) पीड़ा – ..... (घ) लज्जा – .....

10. वाक्य शुद्ध करो–

(क) थी रही हो प्रसन्नता इस काम में।

.....

(ख) था नाम जुबान पर लोगों का विद्यालय।

.....

(क) हो तैयारी गई खोलने विद्यालय की।

.....

(ग) गए हो तैयार सभी के लिए करने सहयोग।

.....

प्रश्न पत्र - II

(पाठ 9 से 14)

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) धर्म आदमी की जड़ जमा देता है–

(i) आदि-अनंत में ( ) (ii) इस संसार में ( )

(ख) मौलवी साहब का स्वभाव भा–

(i) सामान्य ( ) (ii) विचित्र ( )

(ग) कृष्ण को चिढ़ाते थे–

(i) संगी-साथी ( ) (ii) उनके भाई ( )

(घ) कृष्ण बढ़ाना चाहते थे–

(i) अपना कद ( ) (ii) अपनी चोटी ( )

2. रिक्त स्थान में उचित शब्द भरो–

सारी जनता .....।

..... हम आते हैं।

माता के चरणों .....।

..... चढ़ाते हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) आजादी के परवाने पर किसने हस्ताक्षर किए?

(ख) नवयुग की नूतन वीणा में क्या भरना है?

(ग) बलराम क्या तर्क देकर कृष्ण को सौतेला सिद्ध करना चाहते हैं?

(घ) कृष्ण माखन नहीं चुराने में अपनी क्या सफाई पेश करते है?

4. 'नव' उपसर्ग लगाकर लिखो–

(क) युवक – ..... (ख) निर्माण – .....

(ग) युवती – ..... (घ) रात्रि – .....

5. **'ता' प्रत्यय जोड़कर लिखो–**

(क) सम – .....

(ख) अनेक – .....

(ग) मम – .....

(घ) तत्पर – .....

(ङ) विषम – .....

(च) विभिन्न – .....

6. **उचित समुच्चयबोधक भरो–**

(क) सुमित ..... अनिल चंडीगढ़ गए हैं।

(ख) आगे विद्यालय है ..... वाहन की गति कम करें।

7. **सुमेल करो–**

(अ)	**(ब)**
(क) सपूत	(i) अपावन
(ख) पावन	(ii) पुरातन
(ग) नूतन	(iii) मुरझाना
(घ) शुभ	(iv) कपूत
(ङ) खिलना	(v) अशुभ

8. **तुक मिलाओ–**

(क) जात – .....

(ख) खायौ – .....

(ग) धूत – .....

(घ) पायौ – .....

(ङ) चोटी – .....

(च) रीझै – .....

9. **वाक्यों में प्रयोग करो–**

(क) उत्साहवर्धक – .....

.....

(ख) सार्वजनिक – .....

.....

(ग) साक्षर – .....

.....

(घ) निष्फल – .....

.....